साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण 14: 2017-18

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम्' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से 17 नवम्बर 2004 को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

2. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

3. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

4. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

5. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

6. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
शिकोहाबादः दीपक औहरी – 9759213018, मोहित जादोंन – 9358361489
शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141
ई–मेलः shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १३: २०१६-१७

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक
(पूर्व कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी)

श्री उदय प्रताप सिंह
(पूर्व सांसद व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज
श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री उमाशंकर शर्मा
श्री मंज़र-उल वासै
डॉ. अजय कुमार आहूजा
डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया
डॉ. महेश आलोक
डॉ. रजनी यादव
श्री अरविंद तिवारी
डॉ. चंद्रवीर जैन

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

श्रीमती सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 03

साहित्यिक कार्यक्रम

बारहवाँ ग्रामीण कवि सम्मेलन 04
गद्य व्यंग्य पाठ 11
पुस्तक चर्चा 'फिर हरी होगी धरा' 12
'साहित्य–संगीत–कला के विकास में शब्दम् की भूमिका' पर परिचर्चा 16
केदारनाथ सिंह पर लेख–
–डॉ. महेश आलोक 19
नीरज पर लेख – अरिवंद तिवारी 26
नामवरजी पर लेख – डॉ. महेश आलोक 28

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शिक्षा-जगत

शिक्षक सम्मान समारोह 30
छात्र सम्मान समारोह 35
प्रश्नमंच 37
चरित्र निर्माण कार्यशाला 39
संस्कार आरोपण कार्यशाला 40
श्रीमद्भगवद्गीता परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी 42
'प्रह्लाद भक्तिसूत्र' होली महोत्सव 43
संस्कृति एवं प्रकृति विचार गोष्ठी 45
मॉरीशस और भारतीय संस्कृति
–डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया 47

सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्त्री सशक्तिकरण

ग्रीष्मकालीन शिविर 48
महिला दिवस 51
राखी मिलन समारोह 53
'बहन बचाओ अभियान'
विचार गोष्ठी 54
जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र 55
जानकीदेवी बालिका–महिला
पाठशाला 58
'मिशन साहसी' 59
जानकीदेवी बजाज की
126वीं जयन्ती 60
26वां जानकीदेवी बजाज पुरस्कार
जानकीदेवी बजाज की आत्मकथा
के अंग्रेजी संस्करण का विमोचन 62

विविधा

सम्मतियां / सम्मान समाचार 65
अनंत... 66

अध्यक्षीय निवेदन

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित शब्दम् ने 14 वर्ष पूरे कर लिये हैं। अब समय आ गया है जब शब्दम् टीम व शब्दम् से जुड़े हुए सभी साहित्य–संगीत एवं कला प्रेमी शब्दम् की आगामी दिशा एवं दशा निर्धारित करें। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा प्रत्येक कार्यक्रम धरातलीय बदलाव पैदा करे।

एक वेदना का विषय यह भी है कि समस्त प्रयासों के बावजूद आज का युवा अपने ही साहित्य–संगीत–कला से नहीं जुड़ पा रहा है। मेरा सभी शिक्षण संस्थानों से निवेदन है कि उन्हें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति की समझ देनी होगी। अपनी निज भाषा से उन्हें जोड़ना होगा। क्योंकि जो भी समाज अपनी संस्कृति और भाषा से दूर होता है वह धीरे–धीरे अपनी पहचान खो देता है। बिना युवा शक्ति को रोपित किये हमारी संस्कृति धीरे–धीरे विलुप्त हो जाएगी।

पत्रिका के इस अंक में वर्ष भर शब्दम् ने जो प्रयास किए है उसकी एक रिपोर्ट है। इस वर्ष हमने स्थापना दिवस में शब्दम् का स्वरूप कैसा हो इसकी समीक्षा की थी। मैं चाहूंगी कि शब्दम् एवं व्यक्तिगत रूप से आप सभी संस्कृति को बचाने के लिए प्रयास करें।

करण बजाज

"'जिस तरह तैरने की किताब पढ़ कर तैरना नहीं सीखा जा सकता, उसी तरह केवल 'थियरी' पढ़ कर समालोचना नहीं की जा सकती। अच्छी आलोचना तभी होगी जब आलोचक स्वयं को डिक्लास करके साधारण पाठक की नजर से पढ़ेगा। लोक की धड़कन से उसके दिल की धड़कन जुड़ेगी।

–नामवर सिंह"

बारहवाँ ग्रामीण कवि सम्मेलन

● **कार्यक्रम :** बारहवाँ ग्रामीण कवि सम्मेलन ● **दिनांक :** 10 जून 2018
● **अध्यक्षता :** श्री उदयप्रताप सिंह ● **आमंत्रित कविगण :** शैलेन्द्र 'मधुर' (इलाहाबाद, उ.प्र.), अशोक 'अज्ञ' (वृंदावन, उ.प्र.), राधेश्याम 'भारती' (हनुमान गंज, उ.प्र.) ● **स्थान :** ग्राम– दतेई (भौंरेवाले मंदिर के पास)
● **संचालन :** डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

माँ–बाप के लिए हैं, संसार बेटियाँ...

शब्दम् द्वारा आयोजित बारहवाँ ग्रामीण कवि सम्मेलन एटा के ग्राम दतेई में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 800 से 1000 श्रोताओं ने काव्यपाठ का आनन्द लिया। शुभारम्भ करते हुए अशोक 'अज्ञ' ने अपने काव्यपाठ में सुनाया। 'होली हो या दीवाली, त्यौहार बेटियाँ। भाई के हाथ राखी, का प्यार बेटियाँ। कुदरत का एक अनुपम, उपहार बेटियाँ। माँ बाप के लिए हैं, संसार बेटियाँ।' इस कविता को श्रोताओं ने खूब सराहा।

पीपल के पेड़ की छांव में काव्यपाठ करते हुए शैलेन्द्र 'मधुर' ने सुनाया 'सोचिए बाँसुरी के सुरों पर जरा, चित्र राधा का मन में उभर आयेगा, जब भी कान्हा की यादों में जायेंगे हम, मोर का पर हवा में उतर आयेगा....।' काव्य पाठ ने श्रोताओं को मनमुग्ध कर दिया। इसी क्रम में राधेश्याम 'भारती' ने अपनी रचनाओं का पाठ करते हुए कहा 'अब न तुलसी का चौरा ना आंगन दालान, देशी मैल विदेशी साबुन परदेशी पकवान तुम्हीं बतलाओ कृपा निधान और अब क्या होगा भगवान.....।' इस हास्य कविता ने श्रोताओं को खूब हँसाया।

समूह छायांकन।

काव्यपाठ करते शब्दम् उपाध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह।

काव्यपाठ करते कवि अशोक 'अज्ञ'।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उ.प्र. हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह ने काव्यपाठ में कहा कि 'आजादी का सूरज चमका, शहरों और आकाश में, गाँव पड़े हैं अभी गुलामी के इतिहास में.....।' इसी क्रम में शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा मुम्बई से भेजा काव्यमय संदेश पढ़ा गया–'सिर्फ ख्वाबों, सिनेमा, चुटकुलों और भद्दे मजाक की हिन्दी नहीं चाहिए, हमें चाहिए–रोजगार, रोजी –रोटी और काम–काज की हिन्दी। हमें चाहिए – किताब, दुकान एवं संसद में हिन्दी...।'

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी, मुम्बई के कार्याध्यक्ष एवं शब्दम् उपाध्यक्ष प्रो. नन्दलाल पाठक ने मुम्बई से भेजे अपने संदेश में कहा कि 'यह नहीं है गए कल का दीनहीन मलीन भारत, सर उठाए है खड़ा अब विश्व में स्वाधीन भारत....।' स्थानीय कवि जालिम सिंह 'दास' ने भी अपनी कविता का पाठ किया।

ग्राम–समिति से विनेश कुमार चौहान, मुन्नालाल चौहान, धीरेन्द्र सिंह चौहान, उमेशपाल सिंह चौहान, लोकप्रिय उपाध्याय का ग्रामीण कवि सम्मेलन में विशेष सहयोग रहा। संस्था द्वारा ग्रामीणजनों को तम्बाकू से होने वाली हानियों तथा उससे बचने के उपायों के बारे में विस्तार से बताया गया।

काव्यपाठ करते कवि शैलेन्द्र 'मधुर'।

काव्यपाठ करते कवि राधेश्याम 'भारती'।

कार्यक्रम का संचालन करते डॉ. धुव्रेन्द्र भदौरिया तथा काव्यरस का आनंद लेते श्रोतागण।

मां बाप के लिए हैं संसार बेटियां

शब्दम की ओर से दतई गांव में हुआ ग्रामीण कवि सम्मेलन, कवियों ने सुनाईं रचनाएं

कवि सम्मेलन में बही रस की धारा

ग्रामीण कवि सम्मेलन में बही रस की धारा

गांव दतेई में सजी कवियों की महफिल, बांधा समां

अशोक अज्ञ

अशोक अज्ञ का जन्म 25.2.1957 को वृन्दावन में, शिक्षा–बी.एस.सी. शुरू से ही साहित्य के प्रति लगाव; सन 1974 से लेखन कार्य प्रारम्भ किया; खड़ी बोली, ब्रजभाषा में गीत, ग़ज़ल, छंद कविताएं लिखी; साहित्य मंडल–श्री नाथद्वारा से ब्रजभाषा विभूषण से सम्मानित तथा अनेक मंचों पर सम्मान।

कविताएँ

नारी सशक्तिकरण

भूल मत करियो ढिठाई ब्रजनारिन सौं,
साँची जान सिगरे हू लत्ता फार डारिंगी।
नगन घुमावैं कारौ पीरौ करि जामैं फेर घेर घेर
चारौं ओर गाम के निकारिंगी।
गालन पै मार मार गुलचा हजार बार,
पोत पोत कालिख सौं थूथरौ बिगारिंगी।
अंग अंग बाजै जैसै बाजत मृदंग चंग, नानी याद
आवै ऐसौ आरतौ उतारिंगी।

होली हो या दीवाली, त्यौहार बेटियाँ।
भाई के हाथ राखी, का प्यार बेटियाँ।
जिस दिन पिया के घर को, डोली में हो विदा।
आँखों मे आँसुओं का, अम्बार बेटियाँ।
कुदरत का एक अनुपम, उपहार बेटियाँ।
इस सृष्टि का समूचा, आधार बेटियाँ।
सुख–दुख में साथ देतीं, हों सामने खड़ी।
माँ–बाप के लिए हैं, संसार बेटियाँ।

घर के चमन को करतीं गुलज़ार बेटियाँ।
संसार में बहुत सी, फनकार बेटियाँ।
कन्या को भ्रूण हत्या से, अब बचाइए।
बेटों से अधिक करतीं उपकार बेटियाँ।
हीरे हैं पुत्र हीरों का हार बेटियाँ।
सौंदर्य है जहाँ का शृंगार बेटियाँ।
नजरों का फर्क अपने दिल से निकालिए।
करती हैं स्वप्न सारे साकार बेटियाँ।

हर जंग में धनुष की टंकार बेटियाँ।
नागिन सी मारती हैं फुंकार बेटियाँ।
बुजदिल इन्हें समझना है भूल आपकी।
भरती हैं शेरनी सी हुँकार बेटियाँ।

हाथों में जब उठातीं तलवार बेटियाँ।
दुर्गा का बनके आतीं अवतार बेटियाँ।
धरती भी काँप उठती, बहता है जब लहू।
महिषासुरों का करतीं संहार बेटियाँ।

अशोक अज्ञ

शैलेन्द्र श्रीवास्तव (मधुर)

जन्म: 22 जून 1970

पता: कालिन्दीपुरम्, जागृति चौराहा, इलाहाबाद । शिक्षा: बी.ए.

पत्नी–आभा श्रीवास्तव । भाषा: हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी

साहित्यिक अनुभव: 30 वर्ष, कविता एवं लेखन वर्ष 1985 से

मुख्य कृति : 'हम भी हैं अदालत में'

उपाधि एवं सम्मान: नवगीतकार सम्मान (हैदराबाद) औत गौरव सम्मान, गंगा गौरव सम्मान, काव्यश्री सम्मान, साहित्यश्री सम्मान, खामोश गाजीपुरी सम्मान, गीताश्री सम्मान, श्री संगम गौरव सम्मान, युवा साहित्य सम्मान, एकेडमी द्वारा साहित्य सम्मान।

कविता

सोचिए बाँसुरी के सुरों पर जरा, चित्र राधा का मन में उभर आएगा,
जब भी कान्हा की यादों में जाएंगे हम, मोर का पर हवा में उतर आएगा।
मन में गोकुल की सकरी गली देखिए,
घर से राधा निकल कर चली देखिए,
कैसे काँटों से खुद को बचाती है वो,
खिल रही जो कली वो कली देखिए,
पायलें गुनगुनाने लगीं घाट पर,
अब नदी का भी चेहरा संवर जाएगा।
कंकड़ी मारकर गागरी फोड़ दी, हड़बड़ी में हरी डाल ही तोड़ दी,
प्यार की हर कथा जब लगी सूखने, हमने धीरे से पूरी कथा मोड़ दी,
है कथा प्यार के रस में भीगी हुई, यह कथा जो भी बाँचेगा तर जाएगा,
चित्र राधा का,,,,,, है कदंबों मन थोड़ा डरने लगा,
झाड़ियों का बदन भी सिहरने लगा, फिर से जमुना में ऊँची तरंगें उठीं, डूब जाने का मन फिर से करने लगा,
बाँसुरी जिस दिशा में भी बजने लगे, मन किसी का कहीं हो उधर जायेगा।

गीत

अब न राजा रहे, अब न रानी रही, बस किताबों में बिखरी कहानी रही।
बादलों में तुम्हारी ही तस्वीर है, ले गई ये हवा मेरी तकदीर है,
शर्त थी हर जगह, हर सदी में मिलें, ताल में हम मिलें, हम नदी में मिलें,
ताल तो पट गए, सब कमल हट गए,
अब नदी में नहीं वो रवानी रही,
अब न राजा रहे...
गुनगुने दिन न जाने कहाँ खो गए, नींद में हम नहीं, स्वप्न ही सो गए,
शर्त थी बाग में, फूल में हम मिलें, गलतियों में मिलें, भूल में हम मिलें,
भूल भी हो गई, गंध भी बो गई, पर न भूलों में वह रात रानी रही, अब ना राजा रहे... रेशमी रात थी एक बरसात की, याद ताजा है अभी मुलाकात की,
शर्त थी बूँद में, धार में हम मिलें, जीत में हम मिलें, हार में हम मिलें, वक्त भी आ गया, मेघ भी छा गया, पर अँगूठी की खोई निशानी रही, अब न राजा रहे, अब न रानी रही।

शैलेन्द्र श्रीवास्तव (मधुर)

राधेश्याम भारती
जन्म : इलाहाबाद, 2 दिसम्बर 1949
शिक्षा : स्नातक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
व्यवसाय : टेलीकॉम विभाग से सेवा निवृत्त
पता : अजबैया, पोस्ट –हनुमानगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.)

कविताएँ

परिवर्तन

अब न कहीं तुलसी का चौरा, ना आँगन दालान
देशी मैल विदेशी साबुन परदेशी पकवान
तुम्हीं बतलाओ कृपानिधान
और अब क्या होगा भगवान
शुभ कामों में अब वो घी का दीप कहां जलता है
अब तो मोमबत्तियां जलाकर जनमदिवस मनता है
कितने भोले लोग थे कितने सीधे सादे थे
बरातों में भी कितनी सादगी से जाते थे
अब तो अस्पताल भी सजकर जाते हैं लोग लुगाई
रोगी देखने नहीं, देने जाते हैं बधाई
तब शिक्षा इंसान बनाती थी, अब बनते साहब
चमक रहा कैरिअर मगर कैरेक्टर एकदम गायब
पीपल से अब अधिक कुकुरमुत्तों का है गुणगान
तुम्हीं बतलाओ कृपा निधान, और अब क्या होगा भगवान

तब की बहू नैहर से लेकर संस्कार आती थी
सासरे के आंगन की शोभा में निखार लाती थी
अब की बहू नैहर से लेकर नई कार आती है
तभी तो सासरे में अपनी सरकार चलाती है
देवरानी जेठानी के संग बिगुल बजाती है
भाई–भाई को बाली सुग्रीव बनाती है
तब पिछड़े थे अब अपनी क्या खूब सफलता है
एसी में रहते दिमाग में हीटर जलता है
पश्चिम की बयार ने खाली भारत की पहचान
तुम्हीं बतलाओ कृपानिधान....
जितना दाम था जूते का अब उतना फीते का
बोते काली मिर्च तो उगता पेड़ पपीते का
तब बच्चा भी रोये तो हम दौड़ के जाते थे
उसे उठाकर उसकी माँ को डाँट लगाते थे
अब तो मियां बीबी पड़ोस के करें अगर कोहराम
हमें लगे, आ रहा है टीवी पर बढ़िया प्रोग्राम
हर सुख सुविधा त्याग के पहले बनते थे साधू
अब हर सुख सुविधा की खातिर बनते हैं साधू
जकड़ लिया है धर्म को ऐसा धंधे का दलदल
वायुयान में गरुजी हम माला लेके पैदल
इन्टरनेट में समा गये सब रामायन कुरआन
तुम्हीं बतलाओ कृपानिधान

होटल का बैरा

वो बोला कि क्या लाऊं बाबूजी बोलो
खड़ा सामने नीची नज़रें किये था
पिये दर्द था जैसे हर हर्फ उसका
वो बिरवा था एक गम का बरगद लिये था
थी आंखों के कोरों में दो बूंदें अटकीं
वे बूंदें ही सब दासतां कह रहीं थीं।
वो बारह बरस में कमेरा बना है
हैं छोटी उमर घर में सबसे बड़ा है
कभी उसका मालिक कहां पूछता है
तू आया कहां से तेरा हाल कैसा
बचाकर के घर भेजता कितना पैसा
यही पूछता काम कितना किया रे
अभी तक यही इतना किया रे
वो खाता है खाता है होटल की जूठन
वो खाता है थप्पड़ बहन माँ की गाली
कमर तोड़ मेहनत है मक्कार पाजी
ये सब सह न ले तो वो आखिर करे क्या
उसे याद है मोतियाबिन्द का
घिसटता हुआ बाप लकवे का मारा
फटा दस जगह से बहन का दुपट्टा
दवाई के बिन छोटा भाई मरा था
सुबक लेता है सबकी नजरें बचाकर
क्या उसका नहीं हक़ है ताजा हवा पर
पसीना है जिस जिन्दगी की कहानी
है गंगा का जल उसकी आंखों का पानी
कोई बद के इन आँसुओं में नहा ले
कोई एक काँधा वो सर जिसपे रख दे
कोई हाथ हम दर्द दे दे सहारा
कहीं दुख की दरिया का हो तो किनारा
वो बारह बरस में कमेरा बना है
हैं छोटी उमर घर का सबसे बड़ा है।।

“

‘कभी कभी लगता है कि शिक्षक पहले हूँ और आलोचक बाद में। मेरी पूरी आलोचना, आलोचना की व्यावहारिक शिक्षण प्रक्रिया से गुजरते हुए बनी है, इसीलिए मैं मानता हूँ कि ‘‘आलोचक एक दुभाषिए की तरह है। उसका काम रचना को उस ‘वेवलेंथ’ तक ले जाकर पाठक से जोडना है जहां रचनाकार पहुंचना चाहता है या जिस ‘वेवलेंथ’ तक जाकर रचनाकार ने सोच और संवेदना के स्तर पर अपनी सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त किया है। इसके बाद आलोचक की भूमिका समाप्त हो जाती है।’

-नामवर सिंह

”

गद्य व्यंग्य पाठ

● **कार्यक्रम** : 'गद्य व्यंग्य पाठ' ● **दिनांक** : 28 जनवरी 2018

● **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद ● **सहभागिता** : डॉ. प्रेम जनमेजय – प्रख्यात व्यंग्यकार एवं संपादक 'व्यंग्य यात्रा' (दिल्ली), अरविन्द तिवारी–वरिष्ठ व्यंग्यकार, लालित्य ललित– चर्चित युवा व्यंग्यकार एवं संपादक, एन.बी.टी., डॉ. अनुज त्यागी– युवा व्यंग्यकार

'व्यंग्य आँखें खोलता है'

हिन्द परिसर के संस्कृति भवन में गद्य व्यंग्य पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें देश के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों ने श्रोताओं को देर शाम तक बाँधे रखा। अध्यक्षता साहित्य प्रेमी और समाज सेवक उमाशंकर शर्मा ने की। देश के चोटी के व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय ने शिकोहाबाद की शब्दम् संस्था के गद्य व्यंग्य पाठ का विषय प्रवर्तन करते हुए कहा, 'व्यंग्य आंखें खोलता है। बिहारी ने राजा जयसिंह को अन्योक्ति के माध्यम से व्यंग्य का दोहा पेश कर दिशा दी थी।' आगरा के अनुज त्यागी ने व्यंग्य पढ़ते हुए कहा, 'इंटेलिजेंट आदमी कुछ नहीं खाता, वह भक खाता है।'

दिल्ली से आये ललित लालित्य ने 'विलायती राम पांडेय डिस्पेंसरी में व्यंग्य के माध्यम से अस्पतालों की लापरवाही और मरीजों के शोषण की विसंगति को चित्रित किया। शिकोहाबाद निवासी देश के वरिष्ठ व्यंग्यकार अरविंद तिवारी ने देश के विकास की धीमी गति पर जबरदस्त प्रहार करते हुए 'धक्के से आगे बढ़ता देश' नामक व्यंग्य पढ़ा।

दिल्ली से आये चोटी के व्यंग्यकार प्रेमजनमेजय ने जोधपुर चिंकारा हत्याकांड पर चिंकारा से कहलवाया' हुजूर मेरी कोई जाति या सम्प्रदाय होता तो मेरी हत्या पर मेरे समर्थक संसद हिला देते। 'जनमेजय जी का पुलिस सम्बन्धित व्यंग्य बेहद सराहा गया।

गद्य व्यंग्य पाठ में उपस्थित साहित्य प्रेमी।

पुस्तक चर्चा
'फिर हरी होगी धरा'

● **कार्यक्रमः** पुस्तक चर्चा 'फिर हरी होगी धरा' पर विचार गोष्ठी (लेखक–प्रो. नंदलाल पाठक)
● **दिनांकः** 22 जुलाई 2018 ● **स्थानः** संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद

शब्दम् संस्था के तत्वावधान में हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन में समकालीन कविता व ग़ज़ल के महत्वपूर्ण कवि और महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. नन्दलाल पाठक के काव्य संग्रह 'फिर हरी होगी धरा' पर समीक्षा एंव गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें नगर के साहित्यकारों और गणमान्य पाठकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पूर्व स्वर्गीय कवि गोपालदास नीरज को शब्दम् संस्था द्वारा श्रद्धाजंलि अर्पित की गई और दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात् सरस्वती पूजन के साथ पुस्तक चर्चा का कार्य आरम्भ हुआ। पुस्तक चर्चा से पूर्व प्रो. नन्दलाल पाठक का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत किया गया। इसके बाद शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज द्वारा प्रेषित की गई 'फिर हरी होगी धरा' पुस्तक की समीक्षा डॉ. महेश आलोक द्वारा प्रस्तुत की गई। श्रीमती किरण बजाज का मानना है कि पाठक जी की कविता में मानवतावाद, आध्यात्मिकता और गीता का संदेश मौलिक और आधुनिक रूप में स्पष्ट दिखायी देते हैं। उदाहरणार्थ–

गद्य व्यंग्य पाठ में उपस्थित साहित्य प्रेमी।

देव का देवत्व दानव की दनुजता
आदमी के आचरण की देन है।

श्रीमती बजाज पाठक जी के काव्य में आतंकवाद और पड़ोसी देश के छल कपट को भी रेखांकित करती हैं–

'ये क्या मज़ाक है चमन को जो भी चाहे लूट ले?

चमन के साथ जो भी चाहे जिस तरह की छूट ले?

उड़ा-उड़ा-सा रंग है, उदास है कली-कली
शहीद का है खून, बूँद-बूँद का हिसाब दे।'

कवि धर्म के नाम पर हो रहे अधर्म पर भी कटाक्ष करता है–

'मेरे भगवान तेरे नाम पर 'तू-तू मैं-मैं।
तू ही बतला कि तुझे कैसे पुकारा जाये?
देवताओं को मिले छूट अब इंसान बनें,
उनको आकाश से धरती पर उतारा जाये।'

शब्दम् वरिष्ठ सदस्य श्री मंजर–उल वासै ने पुस्तक चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि यह पुस्तक मानवीय संवेदनाओं का दस्तावेज है। राष्ट्रीय एकता और सर्वधर्म समभाव विषयक रचनाएं पाठक को सोचने पर विवश करती हैं। कवि मिलावट को रेखांकित करते हुए कहता है–

मिलावट आसुओं में मुस्कराहट में
मिलावट मौन में
मिलावट जो पुजारी के समूचे आचरण में है।

डॉ. चन्द्रवीर जैन ने पुस्तक पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि पाठकजी हिन्दी ग़ज़ल में उर्दू–फ़ारसी के शब्द तो स्वीकार करते हैं परन्तु उन्हें हिन्दी के व्याकरण के अनुसार प्रयोग करना चाहते हैं। डॉ. जैन ने इस पुस्तक की भूमिका का जिक्र करते हुए महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित किया। उन्होंने संग्रह की पहली कविता का जिक्र करते हुए उसके सौंदर्य का वर्णन किया–

टूट गया यदि कवि धीरज, साँस समय की घुट जायेगी।

कवि को यदि आ गयी नींद, तो असली पूँजी लुट जायेगी।।

डॉ. जैन ने पाठकजी की अनेक कविताओं, ग़ज़लों के उदाहरण देते हुए काव्य की विषय वस्तु पर प्रकाश डाला, साथ ही कला पक्ष को विस्तार से रेखांकित किया। डॉ. जैन के अनुसार पाठकजी की रचनाओं में तत्सम्, तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों का सार्थक ढंग से प्रयोग किया गया है। भाषा सरल, सुबोध और सजग है। भाषा में रवानी है। यही कारण है कि पाठकजी समस्त रचनाएँ गेय हैं।

डॉ. महेश आलोक ने समकालीन कविता में प्रो.नन्दलाल पाठक के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि नन्दलाल पाठक की ग़ज़लें हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा में अनूठी हैं। हिन्दी ग़ज़लों में वह उर्दू और फारसी के व्याकरण को स्वीकार नहीं करते। ग़ज़ल के माध्यम से पाठकजी युवाओं में जोश भरते हुए कहते हैं–

रुका है जल रवानी की जरूरत है
नदी को आज पानी की जरूरत है
मुखौटे पहनकर आए लुटेरे फिर

बहुत ही सावधानी की जरूरत है

अरविन्द तिवारी ने समकालीन कविता के विषय की व्याख्या करते हुए बताया कि इस संग्रह की कविताएं मानवीय रिश्तों में खोई हुयी ऊष्मा खोजने का प्रयास है। आज की कविता बताती है कि चीजें उतनी सपाट नहीं होतीं जितनी दिखायी देती हैं। आज की कविता मनुष्य की खोज का साधन है, जगदीश्वर की खोज का नहीं है। कविता उम्मीद का ही दूसरा नाम है। जब सारी उम्मीदें खत्म हो जाती हैं तब कविता की उम्मीद का जन्म होता है। पाठकजी की कविताओं में बहुत ज्यादा बिम्ब भले ही न हों, किन्तु विन्यास और लयात्मकता देखते ही बनती है। 'आग जलती रहे, आग जलती रहे' में कवि कहता है–

बुझ गयी तो अंधेरा निगल जाएगा।
जगमगाता नजारा बदल जाएगा।
इसलिए आग सीने में पलती रहे।

तीव्र गति से घटती जा रही संवेदनशीलता के दौर में पाठकजी की ग़ज़लें हमे आश्वस्त करती हैं। इनकी अधिकांश ग़ज़लें शिल्प की कसौटी पर खरी उतरती हैं। मनुष्य को आगाह करते हुए पाठकजी कहते हैं–

भक्त ऐसे हैं तो भगवान को अब खतरा है।
ये है ईमान तो ईमान को अब खतरा है।

अरविन्द तिवारी ने पाठकजी के मुक्तकों को महत्वपूर्ण बताते हुए उनकी विशेषताओं को भी रेखांकित किया–

वे गलत थे इसलिए तुम थे सही।
और तुमसे भी हुई गलती वही।
या फिर
मैं दूध का जला हूं, तू दूध की धुली है।
मिलती है कथा मेरी, कुछ तेरी कहानी से।

सभी वक्ताओं ने प्रो. नन्दलाल पाठक की कविताओं के उदाहरण देते हुए अपनी बात रखी। इस समीक्षा चर्चा में डॉ. टी.एन. यादव ने कहा कि हे प्रेमचन्द्र नामक कविता में काव्य का सौदंर्य देखते बनता है–

पीड़ा की गाथा को रोचकता दी तुमने।
मिट्टी की खुशबू को मोहकता दी तुमने।

महेशचन्द्र मिश्रा ने 'वो हारा नहीं है' कविता का जिक्र करते हुए कहा कवि निराशा में आशा भरता है–

भले तन से हारा हो, हारा हो धन से।
वो हारा नहीं है, जो हारा न मन से।

लक्ष्मीनारायण यादव ने कहा कि पाठकजी की ग़ज़लों में विद्रूपता का भी चित्रण हुआ है–

बेसुरेपन का प्रदर्शन चल रहा है।
फट रहे कान, गायन चल रहा है।

अनिल जैन उदित ने भावपक्ष और कलापक्ष की व्यापक समीक्षा की। भाषा की विशेषताएं बताते हुए उसकी सीमाओं का भी जिक्र किया।

ओमप्रकाश बेबरिया, उदयवीर शर्मा एवं अजय मिश्रा, ने भी अपने विचार रखे। गहमा–गहमी से युक्त इस महत्वपूर्ण विचार गोष्ठी का सफल संचालन डॉ. महेश आलोक ने किया। अंत में अरविन्द तिवारी ने सभी उपस्थित साहित्य प्रेमियों का शब्दम् की ओर से आभार प्रकट किया और डॉ. महेश आलोक के संचालन की भूरि–भूरि प्रशंसा की। शब्दम् की अध्यक्षा के प्रति भी आभार प्रकट किया।

समूह छायांकन।

अभिनन्दन पाठकजी

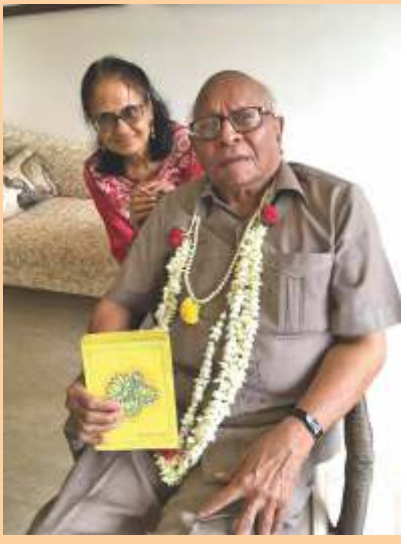

'शब्दम्' की स्थापना के प्रेरणा–स्रोत प्रो. नन्दलाल पाठक ने 3 जुलाई 2018 को 90 वर्ष पूरे किये। उ.प्र. के गाँव औरिहार में जन्में पाठकजी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव–जिला के स्कूलों में हुई। उच्चशिक्षा के लिये वे बनारस आये। लगभग 64 वर्ष पूर्व मुबंई आये। साथ में गाँव की सुगंध–सादगी, और वाराणसी की मस्ती–आध्यात्मिकता–साहित्य संस्कार भी लाये। मारवाड़ी विद्यालय में अध्यापकी से शुरू कर वि.वि. में सहयोगी प्राध्यापक और प्रमुख सोफिया कालेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद तक पहुँचे। साथ ही साहित्य सृजन भी किया। कविता–ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। शैली में सादगी है और कथन में बेबाकी; चिंतन में गहराई है और अभिव्यक्ति में प्रवाह। अवस्था 90 वर्ष लेकिन नज़रिये और कर्मठता में युवा पाठकजी का अभिनन्दन–बधाई और शुभकामनाएँ।

शब्दम् १४वां स्थापना दिवस समारोह

- **कार्यक्रम** : 'साहित्य–संगीत–कला के विकास में शब्दम् की भूमिका' विषय पर परिचर्चा
- **दिनांक** : 17 नवम्बर 2018
- **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद

शब्दम् स्थापना दिवस की 14वीं वर्षगांठ के अवसर पर ''साहित्य–संगीत–कला के विकास में शब्दम् की भूमिका'' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता शब्दम् के वरिष्ठ सलाहाकार श्री उमाशंकर शर्मा ने की।

शब्दम् की गतिविधियों को पॉवर प्वाइन्ट प्रजेंटेशन के माध्यम से दिखाया गया।

इस वार्षिक समारोह का मुख्य उद्देश्य शब्दम् की गतिविधियों की समीक्षा करना था। साहित्य–संगीत–कला के विकास में 'शब्दम्' की भूमिका का विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. महेश आलोक ने कहा कि आज हम इसलिए एकत्र हुए है कि पिछले 14 वर्षों में 'शब्दम्' ने साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में जो उपलब्धियां हासिल कीं एवं हिन्दी को जन–जन तक पहुंचाने में जिस प्रमुख भूमिका का निर्वहन किया, उसको दृष्टिगत रखते हुए आम जनता की दृष्टि से हम अपनी कमियों को भी देख सकें तथा भविष्य की दशा एवं दिशा को भी तय कर सकें।

चर्चा को आगे बढाते हुए श्री मंज़र –उल वासै

परिचर्चा का एक दृश्य।

अपने सुझाव देते शब्दम् सलाहकार श्री मंज़र–उल वासै।

कार्यक्रम संचालन करते, शब्दम् सलाहकार डॉ. महेश आलोक।

ने कहा कि 'शब्दम्' के कार्यक्रम में हमें इस बात का ध्यान रखना है कि सभी कार्यक्रम व्यावहारिक हों।

श्री बहादुर सिंह 'निर्दोषी' ने इस बात पर बल दिया कि शब्दम् की वार्षिक पत्रिका में शब्दों के व्याकरण सम्मत शुद्ध रूपों पर एक कॉलम शुरू किया जाय।

डॉ ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने साहित्य को धर्म के साथ जोड़कर हिन्दी को प्रचारित–प्रसारित करने पर बल दिया।

अरविन्द तिवारी ने कहा कि इस क्षेत्र में काव्य के कार्यक्रमों की बहुतायत है, अतः शब्दम् के माध्यम से गद्य विधा पर कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ।

डॉ. रजनी यादव ने कहा कि 'शब्दम्' के माध्यम से श्रीमती किरण बजाज ने हिन्दी के लिए जो अलख जगायी है उस ज्योति का प्रकाश इस क्षेत्र में फैला है लेकिन हिन्दी के प्रति अभी हमारी तपस्या अधूरी है।

टी.एन. यादव ने कहा कि प्राइवेट सेक्टर में भी हिन्दी जानने वालों को महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिये।

लक्ष्मीनारायण यादव ने एक महत्वपूर्ण बात की तरफ इशारा करते हुए कहा कि बच्चे वर्तनी की अशुद्धियां बहुत करते हैं। इसके लिए शब्दम् की तरफ से नियमित कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिये।

महेश मिश्र ने एवं ओम प्रकाश बेवरिया ने इस बात पर बल दिया कि स्थानीय कवियों को भी सम्मान देते हुए शब्दम् द्वारा पूर्व में आयोजित

अपने सुझाव प्रकट करते शरद बरेजा।

अपने विचार प्रस्तुत करतीं शब्दम् सलाहकार डॉ. रजनी यादव।

पावस गोष्ठी एवं वंसत गोष्ठी को पुनर्जीवित किया जाये। संगीत एवं कला के क्षेत्र में स्थानीय कलाकारों को चिह्नित करते हुए मंच प्रदान किया जाय।

परिचर्चा में राज पचौरी एवं नवीन मिश्रा ने अपने विद्यालयों में गद्य लेखन, प्रश्नमंच एवं शब्दम् प्रकोष्ठ के गठन की चर्चा की तथा इसके माध्यम से हिन्दी के प्रति छात्रों के भीतर रुचि जागृत करने की तरफ ध्यान आकृष्ट किया ।

अन्त में अध्यक्ष पद से बोलते हुए उमाशंकर शर्मा ने कहा कि हमारी रुचियों को संस्कारित करने का साहित्य संगीत और कला एक साधन है , हमें इसे लक्ष्य की तरह नहीं देखना चाहिए। शब्दम् इस अर्थ में समाज को संस्कारित कर रहा है। इसकी एक और महत्वपूर्ण भूमिका है सामूहिकता की भावना को बढ़ावा देने की जिसे आज हम भूलते जा रहे हैं। इससे वाद–विवाद एवं संवाद में रचनात्मक रूप से सहायता मिलती है ।

शब्दम् गतिविधियों की झलकियों को देखते अतिथिगण।

संस्था ने 14 वीं स्थापना दिवस मनाया

शब्दम संस्था का मनाया 14वा स्थापना दिवस

शब्दम की वर्षगांत पर हुई साहित्य चर्चा

समूह छायांकन।

मेरे काव्य गुरु.....

- डॉ. महेश आलोक

'भारतीयपन' (इडियननैस) — देहातीपन —सादगी। यह त्रिकोण भारतीय साहित्य और भारतीय मीडियम के लिए एक प्रतिभाव बन गया। इसके विलोम का अपना खतरा है। शहर के रूमानीकरण का खतरा।.... केदारनाथ सिंह की कविता अपने आप में इन दो संस्कृतियों, दो दुनियाओं के बीच के तनाव को स्मृति और रूपक के जरिए कहती है। उनके यहाँ हाशिए पर मौजूद आवाजें भाषा के केन्द्र में आ जाती हैं। कविता के भीतरी भूदृश्य अनेक परिप्रेक्ष्यों के जागृत होने से अनेकमुखी हो उठता है।' —के. सच्चिदानन्दन (मलयालम)

घुटने तक खादी कुर्ता, एड़ी को छूता हुआ खूब सफेद पैजामा, सामान्य कद— लगभग पाँच फुट दो इन्च के आस—पास, स्वस्थ, इकहरे और गौरवर्ण बदन से लिपटी हुई एक खास तरह की सादगी, गंवई आत्मीयता, करीने से कंधी किए गए श्वेत—श्याम केश, चौड़े फ्रेम की ऐनक के भीतर से टोह लेती बच्चे की तरह उत्सुक, जिज्ञासु तथा प्रश्नाकुल आंखें—मानो जीवन और प्रकृति के बारीक रिश्ते, हलचल खरोंच, गरमाहट तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म क्रिया—व्यापार को 'वीडियो कैमरे' की तरह उसी गतिशीलता, ठहराव तथा नदी की—सी प्रवाहमयता में दर्ज कर लेना चाहती हों। चेहरे से छनकर आती हुई शरद की धूप की—सी चमक, बेहद आत्मीय क्षणों में पहाड़ी झरने की तरह उन्मुक्त हँसी, खिलखिलाहट, अत्यन्त सहज और पारदर्शी व्यक्तित्व।

निश्चित ही आप पहचान गये होंगे कि व्यक्तित्व का यह बाह्य शब्द—चित्र समकालीन हिन्दी कविता के बड़े कवि केदारनाथ सिंह का है और आप को वे तमाम कविताएँ याद आ गई होंगी जो अपनी पूरी बुनावट में व्यक्तित्व के इस सहज और पारदर्शी स्पर्श से झंकृत हैं। अब जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो स्मृतियों में उसी पारदर्शी स्पर्श की छुवन महसूस कर रहा हूँ। अभी भी विश्वास नहीं होता कि भारतीय कविता का यह सूर्य अस्त हो गया है। और सूर्य तो एक ही होता है। अगर वह ही अस्त हो गया तो बचा क्या? मेरे लिये तो भारतीय कविता के सबसे प्रखर युग का अन्त हो गया।

(2)

कहां से शुरू करूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन इतना साफ है कि आज इस संस्मरण में मैं उनकी कविता की चर्चा बिल्कुल नहीं करूंगा। केदारजी मेरे काव्य—गुरु तो थे ही, पी.एच.डी. के शोध निर्देशक भी थे। मैने उनका प्यार, दुलार, डांट—फटकार सब कुछ एक शिष्य के रूप में स्वीकार किया है। मुझे नहीं पता कि वे मुझसे कितना प्यार करते थे, मुझे कितना मानते थे। उन्होंने इस सच का खुलासा कभी किया ही नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि किस समय किस अनुपात में गुरु—शिष्य परंपरा का निर्वाह करना है, किस समय लगभग मित्रवत् हो जाना है, किस समय पितातुल्य व्यवहार करना है, इसका ध्यान वे हमेशा रखते थे।

उनसे पहली मुलाकात की चर्चा के साथ इस संस्मरण की शुरुआत करना चाहूंगा। काशी विद्यापीठ से एम. ए. करने के पश्चात मैंने मन ही मन निश्चय किया कि केदारजी के निर्देशन में शोध करूंगा। इसके पूर्व मैं केदारजी से एक बार भी नहींमिला था। मन ही मन एकलव्य की तरह उन्हे अपना काव्य—गुरु मानता था। मैंने अपनी यह इच्छा अपने प्रिय गुरु प्रो. सुरेन्द्र प्रताप सिंह (स्व. प्रो. बच्चन सिंह के सुपुत्र) से जाहिर की। उन्होंने कहा—जरूर जाओ। केदारजी अगले

सप्ताह मेरे घर पर आने वाले हैं। तीन चार दिन रुकेंगे। उनसे मिल लो। मैं खुशी से झूम उठा। नियत दिन और समय पर मैं बच्चनजी के घर पहुँच गया। और उन्हें देखते ही मैं जैसे सबकुछ भूल गया। चरण स्पर्श करने के पश्चात ऐसा लगा जैसे मुंह से कोई बोल फूट ही नहीं रहे हैं। जैसे एक सपना मूर्तरूप लेकर मेरे सामने बैठा हो और मैं विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ। मैंने अपने हाथ पर चिकोटी काटी कि सचमुच मुझमें चेतना है कि नहीं और मैं स्थिर होकर उन्हें बस निहार रहा था। मेरी चेतना को भंग किया सुरेन्द्रजी ने। उन्होंने केदारजी से कहा कि यह महेश आलोक हैं। मेरे सबसे प्रिय विद्यार्थी। विश्वविद्यालय के सेकेंड टापर हैं। कवि हैं, समीक्षक भी हैं। आपके यहाँ (जे. एन.यू.) से आपके ही निर्देशन में शोध करना चाहते हैं। यह जे.एन.यू. कैसे पहुंचेंगे, आप गाइड कर दें। और हाँ, एक रिश्ता और है इनका आपसे, और शायद यह सबसे मजबूत रिश्ता है। ये मन ही मन आपको अपना काव्य गुरु मानते हैं। केदारजी चौंके। उन्होंने पूछा– मैं तुम्हारा काव्य गुरु कैसे हुआ? मैंने अपने को सम्हाल कर कहा कि सर, पहले मैं छायावादी प्रभाव की कविताएं लिखता था–हाई स्कूल तक। इन्टर में आने के पश्चात मैंने 'तीसरा सप्तक' में संकलित आपकी कविताएं पढ़ीं और उन कविताओं ने मेरी काव्य चेतना को इतना प्रभावित किया कि मैं मन ही मन आपको अपना काव्य गुरु मान बैठा। मेरी काव्य–भाषा बदल गयी। धीरे–धीरे आपके और संग्रह पढ़ता गया। अज्ञेय को पढ़ा। नयी कविता के सारे कवियों को, जिनका संग्रह उपलब्ध हो जाता था, पढ़ता गया। इस तरह मैं अपने को बदल पाया। इसका सारा श्रेय आपको जाता है। न आपको पढ़ता, न मैं बदल पाता। केदारजी मन्द–मन्द मुस्कुराते रहे। बोले जे.एन.यू. आ जाओ, फिर मैं तुम्हारी कविताएं सुनूँगा। उसकी एक निश्चित प्रक्रिया है। टेस्ट दो, फिर साक्षात्कार और फिर शोध निर्देशक का चुनाव। अगर तुम आ गये तो मैं तुम्हें अपने निर्देशन में ले लूँगा। मुझे तो जैसे मुँह माँगी मुराद मिल गयी हो। फिर वे अन्य मिलने वालों से बतियाते रहे और मैं अब भी विश्वास नहीं कर पा रहा था कि केदारजी मेरे सामने बैठे हैं और उन्होंने अपने निर्देशन में शोध करने की अनुमति दे दी है।

(3)

दिल्ली हिन्दी अकादमी से मुझे मेरे कविता संग्रह के प्रकाशन के लिये अनुदान मिला। जाहिर है मैं बहुत खुश था। मैंने जो पांडुलिपि अकादमी को भेजी थी उसे केदारजी के पास लेकर गया और अनुरोध किया कि गुरुदेव! इसकी फ्लैप टिप्पणी लिख दीजिये। उन्होंने पहले तो मुझे बधाई दी और कहा कि पांडुलिपि छोड़ जाओ। एक महीना हो गया, पांडुलिपियों पर उन्होंने कुछ नहीं लिखा। एक दिन मैं उनके साथ डिपार्टमेन्ट जा रहा था। मैंने उनसे कहा कि सर, मेरी पांडुलिपियों का क्या हुआ? वे बोले– 'पांडुलिपियाँ' या 'पांडुलिपि'। मैं अचकचा गया। बोले– तुम्हे छः महीने हो गये हैं। अब तक तो बोली में सुधार आ जाना चाहिये था। बनारस के प्रभाव से बाहर निकलो। मैंने कहा, सॉरी सर, दुबारा ऐसी गलती नहीं होगी। देखो– मैंने तुम्हारा संग्रह पढ़ा। पहला संग्रह जिस तरह का होना चाहिए, वैसा नहीं है। कविताएं अच्छी हैं, लेकिन उन पर काम होना बाकी है। ये फर्स्ट ड्राफ्ट की कविताएं हैं। इन्हें और माँजो। कुल मिलाकर मुझे बहुत अच्छी नहीं लगीं। तुम ऐसा करो, अनुदान राशि लौटा दो। अभी ये कविताएं पुस्तकाकार रूप में आने के लिये तैयार नहीं हैं। आगे तुम्हारी मर्जी। इस संग्रह पर मैं फ्लैप टिप्पणी नहीं लिखूँगा। अगर तुम इसे प्रकाशित करवाना ही चाहते हो तो किसी और से लिखवा लो। मेरे लिये संभव नहीं है। कल आकर पांडुलिपि ले जाना।

मुझे तो जैसे काटो तो खून नहीं। मैं निराश हो गया था। मैंने सोचा जब गुरुदेव को ही कविताएं पसन्द नहीं आयीं, तो मेरे लिखने का क्या फायदा। मुझे अगले कुछ दिनों तक नींद नहीं आयी। अन्ततः मैंने अनुदान राशि लौटा दी और उन कविताओं पर दुबारा काम करने लगा। बहुत दिनों तक तो मुझे कोई कमी नजर ही नहीं आ रही थी। इस बीच मैं नयी कविताएं भी लिख रहा था और वे धीरे–धीरे प्रकाशित भी हो रही थीं। मैं नये सिरे से संग्रह तैयार करने लगा। उस

पूरी पांडुलिपि को ही बाँधकर अलग रख दिया। मैंने देखा कि मुझे नोटिस किया जाने लगा है। केदारजी भी कहने लगे, बहुत अच्छा लिख रहे हो। एक दिन मैंने पुरानी कविताओं के शिल्प से उसकी तुलना की तो मुझे खुद ही अपनी पहली पांडुलिपि की कविताएं बहुत खराब लगीं। केदारजी ने मेरे कवि रूप को बदल दिया था। बाद में उन्होंने मुझे दिल्ली हिन्दी अकादमी से प्रकाशित 'कविता दशक' में शामिल किया और मैं दसवें दशक के युवा कवियों में शुमार हो गया था। 'काव्य गुरु' इसे कहते हैं। जो खतरा उठाकर, ठोंकपीट कर आपको एक समर्थ आकार दे देता है। आपको अपनी पहचान से परिचय करा देता है। इस अर्थ में मैं गुरुदेव केदार जी का आजीवन ऋणी रहूंगा।

(4)

केदारजी एक बड़े रचनाकार के साथ–साथ एक लोकप्रिय अध्यापक भी थे। विद्यार्थियों की नब्ज की अद्‌भुत पकड़ थी उनमें। कविताएं तो कोई उनसे पढ़े। कविता मानो तमाम अर्थ–ध्वनियों के साथ आपके भीतर खुलती जाती थी। आप की संवेदना, आप की अनुभूतियों का अनिवार्य हिस्सा बन जाती थी। ऐसा लगता था जैसे उनकी आवाज का एक–एक ध्वनिकंप जहाँ हमारी संवेदना को भीतर से झकझोर रहा है, उसे नई अनुभव संपन्न दृष्टि से सक्रिय कर रहा है, वहीं अपनी जड़ों से लगातार जुड़े रहने का, उससे ऊर्जा लेने का बोध भी जागृत कर रहा है। एक संपूर्ण भारतीय और जातीय समझ केदारजी को भीतर से अनुशासित किए हुए थी। यह अनुशासन जहाँ उनके व्यक्तित्व का अनिवार्य हिस्सा था, वहीं उनकी कविताओं का भी।

मैंने सुन रखा था कि केदारजी निराला की 'राम की शक्तिपूजा' बहुत अच्छी पढ़ाते हैं। 'राम की शक्तिपूजा' वे एम.ए. के छात्रों को पढ़ाते थे। मैं एम.फिल में था। यह सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं था। जब कक्षाएं शुरू हुईं तो मैने एक दिन केदारजी से पूछा–सर क्या मैं आपकी कक्षा में बैठ सकता हूँ? स्वभावतः उन्होंने पूछा क्यों? मैने अपनी जिज्ञासा ज्यों–की–त्यों रख दी। वे मुस्कुराए, कहा–ठीक है बैठ जाओ। और पहले दिन ही जो प्रभाव मेरे मन–मस्तिष्क पर पड़ा वह आज तक कायम है। ऐसा लग रहा था जैसे मैं 'राम की शक्ति पूजा' की समस्त घटनाओं को अपने सामने घटित होते हुए देख रहा हूँ। ऐसे अनेक अर्थ खुल रहे थे जिसकी मैंने कल्पना भी न की थी। 'रवि हुआ अस्त'– अभी तक मैं इसकी सामान्य व्याख्या ही करता आ रहा था। केदारजी ने इस पंक्ति की व्याख्या करते हुए कहा – केवल सूर्य अस्त नहीं हो रहा था, राम सूर्यवंशी थे, निराला कहना चाहते हैं जैसे पूरे सूर्यवंश का गौरव अस्त हो रहा था। मैं चमत्कृत हो गया। मुझे लगा केदारजी कविता को कैसे समझते हैं, इसकी एक सटीक समझ भी छात्रों के अन्दर विकसित करना चाहते हैं और मैं इसे साक्षात अनुभव कर रहा था।

मैंने उनका व्याख्यान अक्षरशः नोट करना शुरू कर दिया। जो आज भी मेरे पास मौजूद है। उन्होंने दूसरा प्रश्न किया–क्या आप बता सकते हैं कि निराला ने इस कविता का शीर्षक 'राम की शक्तिपूजा' क्यों रखा? सभी छात्र–छात्राएं चुप। किसी के पास इस कठिन लगने वाले सरल प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। उन्होंने मुझे खड़ा किया। महेश, तुम बताओ– तुम एक रचनाकार भी हो। तुम्हें क्या लगता है? मैंने अपनी असमर्थता जाहिर की। वे बोले – निराला इस कविता का शीर्षक 'राम की दुर्गा पूजा' भी रख सकते थे। कृत्तिवास रामायण से प्रभावित यह कविता दुर्गा की आराधना को केन्द्र में रखती है। बंगाल की परम्परा की देन है यह। अन्त में दुर्गा ही लीन होती हैं। इसलिए सहज था कि निराला इस कविता का शीर्षक 'राम की दुर्गा पूजा' रख देते और सामान्य दृष्टि से यह ज्यादा कम्यूनिकेटिव भी होता।

लेकिन उस समय देश स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई लड़ रहा था और जनता में युवाओं में 'शक्ति' का संचार करना उस समय के बड़े रचनाकारों का प्रमुख ध्येय था। उन्हें धार्मिक प्रतीकों में न धकेलकर प्रगतिशील चेतना से जोड़ना था और एक रचनाकार के रूप में बड़ी लड़ाई का हिस्सा भी बनना था,

इसलिए निराला ने इस कविता का शीर्षक 'राम की शक्तिपूजा' रखा और वे जामवन्त से सलाह दिलाते हैं कि 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना'—अर्थात् आराधना की एक प्रगतिशील परंपरा की नींव निराला इस कविता के माध्यम से रख रहे हैं।'

मेरे लिए तो यह व्याख्या बिल्कुल नयी थी। मुझे इस तरह से किसी अध्यापक ने इस कविता को समझाया ही नहीं। एक अध्यापक के रूप में केदारजी का यह कद था। इसीलिए वे छात्र—छात्राओं के मध्य एक अत्यन्त लोकप्रिय अध्यापक थे। कविता कैसे समझी जाती है, इस समझ को विकसित करने वाले वे पूरी पाठशाला थे।

(5)

'साखी' का दूसरा या तीसरा अंक आने वाला था। केदारजी उसके प्रधान संपादक। सदानन्द साही उसके कर्ता—धर्ता। 'साखी' अपने प्रवेशांक के साथ ही हिन्दी की अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्रिका बन गयी थी। केदारजी का इस पत्रिका के साथ भावनात्मक लगाव था। इसलिए वे पत्रिका के 'ले आउट डिजाइन' से लेकर प्रत्येक सामग्री पर पैनी नजर रखते थे। उनका संपादकीय कद बड़ा था। सामग्री का चयन किस तरह करना है जिससे पत्रिका रचनात्मक रूप से पठनीय बन सके, इसकी बारीक समझ उनके पास थी। इस अंक में मेरी कविताएं भी जा रही थीं। सदानन्दजी होस्टल में मेरे कमरे पर ही रुके थे। साथ में थे राजेश मल्ल। पत्रिका दिल्ली में ही छप रही थी। सारी सामग्री तैयार थी। हम लोग सुबह से ही प्रकाशक के यहाँ जमे थे। छपाई के प्रत्येक स्तर पर ध्यान रखे हुए थे। 'कवर डिजाइन' से लेकर प्रत्येक पृष्ठ के संयोजन पर। अन्ततः पत्रिका छप कर तैयार हो गयी।

गर्मी का दिन। हम लोग पसीने में लथपथ रात 11 बजे पत्रिका लेकर केदारजी के निवास पर पहुँचे। केदारजी ने पत्रिका को देखा, उलटा— पलटा और आग—बबूला हो गये। जाहिर है पत्रिका की 'ले आउट डिजाइन' जैसी वे चाहते थे, नहीं थी। रंग—संयोजन जैसा होना चाहिये था नहीं था। जिस फान्ट में सामग्री जानी चाहिए थी, वह फॉन्ट नहीं था। उन्होंने पत्रिका उठाई और उसे दो टुकड़ों में करते हुए हम लोगों के ऊपर फेंक दिया। डाँट—फटकार का सिलसिला 5 मिनट तक चला। केदारजी को गुस्सा भी आता है और इस रूप में आता है, यह मैंने पहली बार देखा। हम लोग लगभग रो दिये। वापस कमरे पर लौट आये। रात भर नींद नहीं आयी। क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

दूसरे दिन साहस करके उनके पास गये। केदारजी भी दुखी थे। उन्होंने क्रोध में इतना विकराल रूप धारण कर लिया था। वे हम लोगों को सहज करते हुए बोले—काफी पिओगे या चाय। साहीजी ने हिम्मत जुटाकर कहा—इसे दुबारा प्रकाशित करते हैं। इस बार आपको शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा। केदारजी ने कहा— नहीं, जैसी है इसी रूप में आने दो। इस अंक में इतनी पठनीय और गम्भीर सामग्री है कि पहले अंक की तरह खूब चर्चित होगी। और उन्होंने इतनी सहजता और प्यार से एक दिन पहले वाली डाँट पर मरहम लगाया कि हम एक रात पहले की सारी पीड़ा भूल गये। ऐसे थे केदारजी। मोम की तरह तुरन्त पिघल जाने वाले। जिसे चाहते थे उसे कभी दुख में नहीं देख सकते थे।

(6)

शिकोहाबाद (उ.प्र.) में साहित्य, संगीत और कला की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'शब्दम्' (अध्यक्ष—श्रीमती किरण बजाज) द्वारा उन्हें सम्मानित किया जाना था। चूँकि मैं इस संस्था के सलाहकार मंडल का सदस्य हूँ, इसलिए उन्हें इस सम्मान को स्वीकार करने के लिए राजी करने का जिम्मा मुझे दिया गया। केदारजी ने कहा सिर्फ तुम्हारे लिए चल रहा हूँ। मुझे लगा गुरुदेव ने मेरा मान बढ़ा दिया। केदारजी आये। प्रो. गोविन्द प्रसाद भी साथ में थे। शिकोहाबाद शहर में प्रवेश करने के साथ ही वे मुझे यहाँ से निकलने की सलाह देने लगे थे। ये बात अलग है कि 'हिन्द लैम्प्स परिसर' (जहाँ संस्था का मुख्य कार्यालय है) में प्रवेश करने के साथ ही उनका मन बदल गया। उन्होंने कहा— अद्‌भुत शान्त जगह है। पेड़ों और

वर्ष 2013 में प्रो. केदारनाथ सिंह को सम्मान पत्र भेंट करतीं शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज।

पक्षियों को रहने के लिए सबसे सुरक्षित जगह और कवियों के लिए भी। अपनी आवभगत से वह अत्यन्त प्रसन्न थे। उनके घनिष्ठ मित्र, पूर्व सांसद और मंचीय कविता के बादशाह कवि उदयप्रताप सिंह (उदयजी शब्दम् के न्यासी मंडल के सदस्य हैं और उपाध्यक्ष भी) 'शब्दम्' अध्यक्ष–श्रीमती किरण बजाज के साथ उनकी अगवानी में उपस्थित थे।

खैर, दूसरे दिन सम्मान कार्यक्रम शुरू हुआ। मैं संचालन कर रहा था। मैंने उनका परिचय देने के पश्चात् हिन्दी ही नहीं पूरी भारतीय कविता में उनकी उपस्थिति को रेखांकित करते हुए उन्हें सबसे बड़े कवि के रुप में सिद्ध करने की कोशिश की। केदारजी अपनी प्रशंसा बहुत ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। खासकर उस समय जब यह प्रशंसा उनकी उपस्थिति में की जा रही हो। उस दिन भी यही हुआ। उन्होंने बीच में ही टोक कर कहा– 'महेश, बहुत ज्यादा हो गया। अब बस। कार्यक्रम को आगे बढ़ाओ।'

समकालीन भारतीय कविता के सबसे महत्वपूर्ण कवि का यह विनम्र संकोच सभी श्रोताओं को भीतर तक आह्लादित कर गया। यह केदारजी का वास्तविक चरित्र था। मुझे याद आया सन 2014 में हैदराबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग द्वारा 'समकालीन कविता और केदारनाथ सिंह' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, जिसमें केदारजी भी उपस्थित थे। संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में आत्म–वक्तव्य देते हुए बहुत ही संकोच से उन्होंने कहा था– "आज अनुभव हुआ कि अपनी कविताओं के बारे में दूसरों के मूल्यवान विचारों के बावजूद अपनी ही कविताओं के उद्धरणों को बार–बार सुनकर बर्दाश्त कर पाना कितना मुश्किल है। भारतीय काव्यशास्त्र में कहा गया है कि जीवित कवियों पर विचार नहीं करना चाहिए। इसमें जोड़ना चाहूँगा कि यदि कवि सामने बैठा हो तब तो हरगिज नहीं।'' केदारजी को हिन्दी के वैश्विक चरित्र पर एक व्याख्यान भी देना था और

वर्ष 2013 में शब्दम् के नवम् स्थापना दिवस समारोह के दौरान समूह छायांकन।

अपनी कविताएं भी सुनानी थीं। उन्होंने मुझसे कहा– कविताओं का चयन कर लो। तुम यहाँ के श्रोताओं के मानसिक स्तर से भलीभांति परिचित हो। मैंने आठ–दस कविताओं का चयन किया। उन्हें दिखाया, वे सहमत दिखे और मेरे चयन की दृष्टि को देखते हुए एक–दो कविताओं का सुझाव उन्होंने अपनी तरफ से दिया। और वे ही कविताएं ज्यादा पसन्द की गयीं, जिनका चयन उन्होंने किया था। वे हिन्दी के वैश्विक चरित्र पर बोले और खूब जमकर बोले। श्रोताओं का मानना था कि ऐसा सार्थक कार्यक्रम शिकोहाबाद में पहली बार हुआ है। वे तो अभिभूत थे कि हिन्दी ही नहीं भारतीय कविता के इतने बड़े कवि को साक्षात देख–सुन रहे हैं। कार्यक्रम के बाद केदारजी ने मुझसे पूछा–'महेश सब कुछ तुम्हारी कल्पना के अनुरूप रहा न। मैं तो जैसे पानी–पानी हो गया। मैंने कहा–सर, आज शब्दम् ही नहीं, शिकोहाबाद अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है कि उसने आपको साक्षात देखा और सुना है। केदारजी अपने शिष्यों का मान बढ़ाना जानते थे, जैसे आज उन्होंने मेरा बढ़ा दिया था।

(7)

केदारजी का व्यक्तित्व वस्तुतः उस बिम्ब की तरह था जो अपनी तमाम अर्थसघनता में कई–कई अर्थछायाएँ विकसित करता है। इन अर्थ छायाओं में कहीं बहुत गहरी चुप्पी अर्थवान हो उठती थी, तो कहीं लोकजीवन और शहरी जीवन के मध्य तनाव और अंतर्द्वद्व। कहीं जीवन के प्रति आस्था और संकेत ध्वनित होने लगता था, तो कहीं एक लापरवाह किस्म का सचेत फक्कड़पन। ऐसा फक्कड़पन जिससे आस्था या अनास्थावादी या लगभग गैरजरूरी प्रवृत्तियों के खिलाफ चुनौती का भाव शालीन ढंग से अभिव्यक्त हो रहा हो। कहीं आत्मविश्वास एवरेस्ट की चोटी छूने लगता था, तो कहीं उस ऊँचाई से सतह पर देखने की छटपटाहट जोर मारने लगती थी। सचाई यह भी है कि कहीं उनका 'रचनात्मक आलस्य' जीवन की गतिमयता में जोरदार ढंग से 'ब्रेक' लगाता था, तो कहीं इस 'ब्रेक' वाली जमीन पर ठहरकर आस–पास देखने, थोड़ा सचेत ढंग से चलने, सोचने तथा जीवन और प्रकृति के सूक्ष्म रिश्ते को बारीक संवेदनात्मक पकड़ द्वारा खोलने में सहायक की भूमिका का भी उतनी ही सजगता से निर्वाह करता था। 'आलस्य' का रचनात्मक इस्तेमाल करना केदारजी खूब जानते थे। असल में केदारजी का यह 'व्यक्तित्व', उन्हें एक खास तरह का 'मूडी आदमी' बनाता था। इस 'मूड' में तनाव है, सहजता है, आस्था है, अनास्था है, अत्यन्त संवेदनशील होने की सजगता है, इस सजगता में चाहे–अनचाहे दूसरों को दुख न पहुँचाने की नैतिक मर्यादा है। 'मर्यादा' भी उस स्तर पर कि कभी–कभी आत्मविश्वास और वह भी गहरे आत्मविश्वास और नैतिक साहस को खतरे में डाल देना उचित जान पड़े। भले 'कुछ' भीतर टूट कर बिखर जाए– उनकी उदारता और सहनशील होने की अद्‌भुत क्षमता को उजागर करता है। वैसे केदारजी स्वभाव से शालीन और प्रसन्नचित इंसान थे। उनकी आँखें हँसती थीं। उनकी भृकुटि या होठ जब किसी स्वाभाविक क्रोध से संतुलन खोने लगते थे, तब उनकी आँखों में बराबर बनी रहने वाली हँसी की सहजता उस संतुलन को कायम रखने में बहुत सहायक होती थी। सामने बैठा व्यक्ति उनके इस क्षणिक क्रोध का अर्थ समझता था। वे क्षण भर में ही अपने होंठों की सहज मुस्कान से भीतर की निश्छलता को प्रकट कर देते थे। भृकुटियों की वक्रता उनके सहिष्णु हृदय की अदृश्य तरंगों से संचालित हो उठती थी। जो उनके निकट थे उन्हें इन अदृश्य तरंगों के स्पर्श तल में ममत्व, संकोच, प्रेम, मस्ती, बेफिक्री, गंभीरता और सहानुभूति की वह मजबूत पतली सतह मिल जाती थी, जिस पर उनका व्यक्तित्व खड़ा था।

(8)

युवा कवियों और उनकी रचनाओं के बीच बराबर बने रहने की कोशिश केदारजी आजीवन करते रहे। नई रचनाशीलता के प्रति उनका आकर्षण, लगाव और उम्मीद–नए रचनाकारों को आश्वस्त करती थी और कविता के भविष्य को भी । भविष्य की इस आहट और सुगबुगाहाट की मद्धम आँच से अपने रचनात्मक

व्यक्तित्व को उन्होंने रचा था, तराशा था, संवेदनात्मक स्तर पर सक्रिय किया था– 'मैं युवा कवियों से लगातार संवाद बनाए रखना चाहता हूँ। उनके बीच रहकर मैं खुद भी नया होता हूँ । अपने भीतर एक नई ऊर्जा महसूस करता हूँ। क्योंकि वे सब कुछ को, पुरानी पहचान को छिन्न–भिन्न कर एक नया रास्ता, भाषा का एक नया तेवर नया मुहावरा गढ़ सकते हैं। कविता के क्षेत्र में बहुत दिनों से चली आ रही चुप्पी को तोड़ सकते हैं''। इस बात को वे सिर्फ कहते ही नहीं थे, अपनी सक्रियता से चरितार्थ भी करते थे। इतना अवश्य है– इस सक्रियता की गति बहुत धीमी थी। एक विशेष किस्म की चौनदारी थी उसमें। क्यों न हो? यह चौनदारी ही तो उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाती थी। केदारजी के व्यक्तित्व और उनकी कविता के मध्य उनकी सहज आत्मीयता और उसकी रचनात्मक ऊष्मा सेतु के रूप में विकसित होती गई है। ऐसा लगता है जैसे उस ऊष्मा की सहजता और मुस्कान से, एक सर्जनात्मक विनयशीलता से वह सेतु बिम्ब–प्रतिबिम्ब की गहरी समझ और संवेदना विकसित करता हुआ दोनों (व्यक्तित्व और कविता) के हृदयतल में अवस्थित हो गया हो– एक अनंत तस्वीर के छाया चित्रों से दोनों के सम्बन्ध को प्रगाढ़ करता हुआ और यह प्रगाढ़ता ही सचमुच उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की सहज तस्वीर है। एक ऐसी तस्वीर जिसमें केदार नाथ सिंह हैं– सिर्फ और सिर्फ केदारनाथ सिंह। आज जब वे नहीं हैं, उनकी यही प्रगाढ़ता अपने जीवन में भी पूरी शिद्दत से महसूस कर रहा हूँ। ऐसा लगता है जैसे अभी उनका फोन आयेगा और मुस्कुराते हुए पूछ पड़ेंगे– महेश, कैसे हो? बहुत दिनों से तुम्हारी कविता नहीं पढी। और मैं उन्हे आश्वस्त करता हूँ कि गुरुदेव! आप निश्चिन्त रहें। आपका यह शिष्य आपको निराश नहीं करेगा। अब वह रचनात्मक सम्बल कौन देगा। लेकिन मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानता हूँ मेरे काव्य गुरु अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, हमेशा मेरे साथ हैं और रहेंगे।

सम्मान पत्र भेंट करतीं शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज।

केदारनाथ सिंह (7 जुलाई 1934– 19 मार्च 2018) 'समकालीन हिन्दी कविता के वरिष्ठ एवं विशिष्ट कवि केदारनाथ सिंह का जाना हिन्दी कविता के एक युग का अंत है। उम्मीद थी कि यह अद्भुत जिजीविषा और कविता तथा जीवन में उम्मीद का कवि मृत्यु को धता दिखाकर वापस लौट आयेगा, लेकिन नियति को कुछ और ही मन्जूर था। केदार जी चले गये। समकालीन हिन्दी कविता में सूर्यास्त हो गया। वे आधुनिक कविता के सबसे दुर्लभ प्रगतिशील और सौन्दर्यवादी कवि थे। शब्दम् ने वर्ष 2013 में उन्हे 'शब्दम् साहित्य सेवी सम्मान' देकर सम्मानित किया था। उन्होने कहा था कि यह सम्मान उन्हे मिले सभी सम्मानों में सबसे विशिष्ट है। सच तो यह है कि उन्हे सम्मनित कर शब्दम् स्वयं सम्मानित हुई थी।

''जीते जी किंवदंती बन गए थे नीरजजी''

- अरविन्द तिवारी

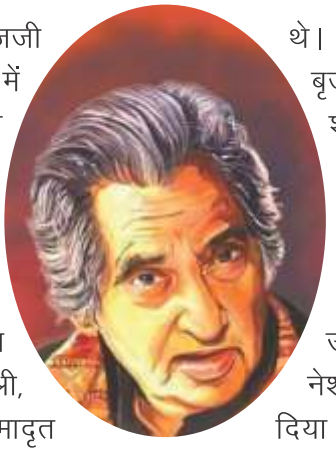

वाचिक परम्परा के इतिहास में नीरजजी गिने चुने कवियों में शुमार हैं। साहित्य में भी वह गीत परम्परा के महत्वपूर्ण कवि हैं। सत्तर साल का मंचीय जीवन वाचिक कविता में एक प्रतिमान है। एक ही परिवार की तीन तीन पीढ़ियों ने नीरजजी को सुना है, सराहा है। ऐसी लोकप्रियता किसी अन्य मंचीय कवि को शायद ही मिली हो। पद्मश्री, पद्म भूषण जैसे सम्मानों से समादृत नीरजजी की झोली में यश भारती से लेकर मंत्री पद तक आ गिरे थे। अन्तिम समय में भी वह साहित्यकारों के हितों के लिए संघर्षरत रहे। उत्तर प्रदेश सरकार उनके आगे झुकी और असहाय साहित्यकारों, कलाकारों को मिलने वाली यश भारती पैंशन की बहाली हुई।

मेरे परिवार मेरे पिताजी, चाचाजी और मैं खुद उनका बहुत बड़ा प्रशंसक रहा हूं। सभी लोग कवि सम्मेलन सुनने का शौक रखते थे । दूसरे शहर में जाकर भी कवि सम्मेलन सुनते थे। लेकिन उनसे मिलने का मौका मुझे 1974 में मिला जब मैं उन्हें एक कवि सम्मेलन के लिए बुक करने अलीगढ़ उनके निवास पर गया। पढ़ाई समाप्त करके कुछ दिनों तक मैं कासगंज के एक निजी विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत रहा। 1973 से व्यंग्य कविताएं लिखने लगा था। बिना पैसे के दो तीन मंच भी पढ़ चुका था। हमारे स्कूल के प्रबंधक शांतिलाल सर्राफ ने मुझे कवियों को बुक करने का काम सौंपा था। बल्कि एक तरह से मैंने पहल करके इसे हथिया लिया था ! यह कवि सम्मेलन भवन निर्माण हेतु राशि एकत्रित करने के लिए किया जा रहा था। नीरजजी सबसे ज्यादा पारश्रमिक पर आए थे। उस कार्यक्रम में देवराज दिनेश बृजेंद्र अवस्थी, आत्म प्रकाश शुक्ल, शशि तिवारी, निर्भय हाथरसी जैसे दिग्गज कवि नीरजजी के साथ थे। पर बाद में नीरजजी मुझे भूल गए। उनके निकट जाने का मौका तब मिला जब मेरे श्रद्धेय दादा उदयप्रतापजी ने मुझे भोगांव के नेशनल डिग्री कॉलेज में मंच पर बैठा दिया। उसी दिन मैंने दोनों के बीच गहरी दोस्ती के बारे में जाना। उन दिनों उदयप्रतापजी भोगांव के एक इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। मैं उनके पास जाकर अपनी व्यंग्य कविताएं सुना आया था। तब उदय दादा और नीरजजी के समीप बैठकर मुझे पता चला कि नीरज जी अच्छे ज्योतिषी भी हैं। फिर कई बार उनके साथ मंच पर बैठना हुआ। मेरे लिए इतना ही काफी था। मैं नवोदित था, वे कैसे याद रखते।

नीरजजी जीते जी लीजेंड का दर्जा प्राप्त कर चुके थे। उनके बारे में इतनी कहानियां थीं कि लोग वस्तुस्थिति से वाकिफ नहीं हो पाते। उनके इश्क के भी तमाम किस्से थे। शराबनोशी तो जगजाहिर थी ही पर प्रतिभा का अपना प्रभामंडल था, जो सब पर भारी पड़ता था। उनकी रचनाएं क्लासिकल हैं, जो सैकड़ों वर्षों तक याद रखी जाएंगी। कहते हैं इश्क के चक्कर में कॉलेज की नौकरी गई और वह फ्रीलांसर हो गए। मंच पर 'कारवां गुजर गया' सर्वाधिक लोकप्रिय गीत था, जो लिखने के बाद फिल्म में लिया गया। यह गीत नीरजजी का पर्याय हो गया। इसका सौंदर्य अद्भुत है। आधुनिक कविता में जो बिम्ब विधान है वह इस गीत में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए 'साथ के सभी

दीए धुआं पहन पहन गए' वाली पंक्ति का बिम्ब विधान अद्वितीय है। वैसे तो फिल्मी गीत 'सिचुएशन' के आधार पर लिखवाये जाते हैं, पर इस गीत के अनुकूल फिल्म में सिचुएशन बनाई गई! राजकपूर ने जब 'मेरा नाम जोकर' फिल्म के गीत लिखवाये तो नीरजजी को आर के स्टूडियो में एक तरह से नजरबंद ही कर दिया था! उनके लिए वहां सभी सुविधाएं जुटाई गईं। 'मेरा नाम जोकर' तो नहीं चल पाई पर नीरज जी के लिखे हुए गीत खूब चल पड़े !

नीरजजी की कविता 'जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए' हर दीपावली पर कई पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। मंच नीरजजी से कारवां के बाद जिन गीतों की खूब फरमाइश होती, उनमें 'शोखियों में घोला जाए फूलों का शबाब', 'ए भाई जरा देख के चलो' 'आदमी हूं, आदमी से प्यार करता हूं, 'लिक्खे जो खत तुझे वो तेरी याद में', खिलते हैं गुल यहां खिल के बिखरने को' आदि शामिल थे।

फिल्मी गीतों से इतर उनकी कविता फिल्मी गीतों से ज्यादा पसंद की गई। देखें उनकी साहित्यिक कविताओं की एक झलकः

खुशबू सी आ रही है इधर जाफरान की
खिड़की खुली है शायद उनके मकान की
ज्यों लूट लें कहार ही दुल्हन की पालकी
हालत यही है आजकल हिंदुस्तान की

नीरज जी की सत्रह से अधिक काव्यकृतियों का प्रकाशन हुआ। प्राण गीत, विभावरी, बादर बरस गए, नीरज की पाती, कारवां गुजर गया, फिर दीप जलेगा, नीरज की गीतिकाएं आदि कृतियां अधिक प्रसिद्ध हुईं।

उ.प्र. की सपा सरकार में उन्हें मंत्री पद भी मिला और भारी भरकम राशि के सम्मान भी। सपा के मुखिया और उनका पूरा परिवार नीरजजी की कविता का मुरीद रहा है। सैफई परिवार और नीरजजी के बीच सेतु रहे उदयप्रतापजी नीरज जी की मृत्यु तक उनके अभिन्न मित्र रहे।

4 जनवरी 1925 में जन्मे नीरजजी का अवसान 19 जुलाई 2018 को हो गया। शब्दम् संस्था ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी है उन्हीं की पंक्तियों के साथ –

''इतने बदनाम हुए हम तो इस जमाने में
तुमको लग जाएंगी सदियाँ इसे भुलाने में''

–अरविन्द तिवारी
मेहरा कॉलोनी शिकोहाबाद

गोपालदास 'नीरज' (4 जनवरी 1925–19 जुलाई 2018) आंसू जब सम्मानित होंगे 'मुझको याद किया जाएगा जैसी यादगार पंक्तियों को लिखने वाले गीतकार नीरज जी का देहावसान साहित्य जगत को विचलित कर गया। वह वाचिक कविता के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान प्राप्त करने वाले इस अप्रतिम गीतकार का शब्दम् से पारिवारिक नाता रहा है। वह शब्दम् के कार्यक्रमों में शामिल भी हुए हैं।

लोकप्रिय फिल्मी गीतों को देने वाले नीरज जी को फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला और उप्र शासन से यश भारती सम्मान भी। कारवां गुजर गया उनका सबसे लोकप्रिय गीत है जो साहित्य की दृष्टि से भी बेजोड़ है। मानवता और प्रेम को लिखने और जीने वाला यह गीतकार शब्दम् संस्था के उपाध्यक्ष श्री उदय प्रताप जी का अभिन्न मित्र भी था ,इस नाते उनका शब्दम् से जुड़ाव भी रहा। सर्वाधिक लोकप्रिय गीतकार नीरज जी जब यह गाते थे ''तमाम उम्र मैं एक अजनबी के घर में रहा। सफर न करते हुए भी किसी सफर में रहा'' तो उनकी आध्यात्मिक चेतना पाठकों और श्रोताओं को भिगो जाती थी। वह ताउम्र इंसान को इंसान बनाने की कोशिश में लगे रहे। ऐसे लोकप्रिय और अप्रतिम कवि को शब्दम् परिवार बारम्बार नमन करता है।

नामवरजी ने हिन्दी आलोचना को एक 'विमर्श' के रूप में स्थापित किया

- डॉ. महेश आलोक

नामवर जी नहीं रहे।वे योद्धा थे। विषम से विषम परिस्थितियों से बाहर निकलना जानते थे।दृढ़ निश्चयी थे। लेकिन चले गए। असल में नामवरजी हिन्दी आलोचना की जीवित किंवदन्ती या जीते जी हिन्दी आलोचना के प्रतिमान बन गए थे। वे हिन्दी के पहले आलोचक हैं जिन्होने पूरी भारतीय आलोचना को अपनी समग्र और विहँगम प्रगतिशील विश्वदृष्टि से प्रभावित किया। इसीलिए दूसरी भारतीय भाषाओं के रचनाकारों में भी वे उतने ही लोकप्रिय थे जितने हिन्दी में। उन्होंने आलोचना को एक 'विमर्श' के रूप में स्थापित किया। यह कार्य उन्होंने आलोचना की वाचिक परंपरा के माध्यम से किया। आलोचना को सीधे श्रोताओं के मध्य ले गए। उसे व्यवाहारिक आलोचना पद्धति से जोड़ा। पाठकों या श्रोताओं से सीधा रागात्मक सम्बन्ध स्थापित किया और एक नए किस्म की आलोचनात्मक प्रविधि से सभी को चमत्कृत कर दिया। नामवरजी की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने आलोचना की 'वस्तुनिष्ठता' को, व्यावहारिक आलोचना की संवादधर्मी प्रकृति से जोड़कर उसे बातचीत का निरन्तर चलने वाला एक सृजनात्मक माध्यम बना दिया था, जिसमें स्थापनाएं बनती हैं, विगड़ती हैं, संवादधर्मी बहसों के माध्यम से एक नया रुप ग्रहण करती हैं। पाठक या श्रोता जिसमें सीधे हस्तक्षेप कर सकता है और आलोचक के कहे हुए को 'ब्रह्मवाक्य' न मानकर उस विमर्श का साझीदार बन जाता है।

पिछले पचास वर्ष से भी ज्यादा समय से नामवरजी आपनी आलोचना पद्धति, निरन्तर नवीन स्थापनाओं के चलते बहसों और विवादों के केन्द्र में रहे। बहुत से ऐसे आलोचक हैं जो दूसरा नामवर बनने की लालसा लिए नष्ट हो गए, लेकिन नामवर नहीं बन पाए। नामवरजी की यह विशेषता है कि उन्होने अपना कोई विकल्प नहीं बनने दिया या यह कहें कि उन जैसा बनना ही असँभव है।

मैने लगभग छः वर्ष पहले शिकोहाबाद में 'शब्दम्' संस्था की तरफ से उन्हे उनके 'आलोचक रूप' से अलग एक शिक्षक के रूप में सम्मानित करने की योजना बनायी। गुरु होने के नाते मेरा आग्रह उन्होने स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा कि कम से कम महेश आलोक ने यह सोचा तो कि मैं आलोचक के साथ–साथ एक शिक्षक भी हूँ और शिक्षक के रुप में यह मेरा पहला सम्मान है। नामवरजी बोलते बोलते भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि कभी–कभी लगता है कि शिक्षक पहले हूँ और आलोचक बाद में। मेरी पूरी आलोचना, आलोचना की व्यावहारिक शिक्षण प्रक्रिया से गुजरते हुए बनी है, इसीलिए मैं मानता हूँ कि ''आलोचक एक दुभाषिए की तरह है। उसका काम रचना को उस 'वेवलेंथ' तक ले जाकर पाठक से जोडना है। जहां रचनाकार पहुंचना चाहता है या जिस 'वेवलेंथ' तक जाकर रचनाकार ने सोच और संवेदना के स्तर पर अपनी सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त किया है। इसके बाद आलोचक की भूमिका समाप्त हो जाती है।'

नामवरजी ने आलोचना को कभी उबाऊ नहीं होने दिया। वे एक सहज वार्ताकार के रूप में सामने आते थे और देखते ही देखते श्रोता को अपने मोह पाश में बाँध लेते थे। उन्होंने आलोचना को 'वाद– विवाद –संवाद' का माध्यम बनाया और उसे शास्त्र के बोझिल रूप से निकालकर रसात्मक शास्त्रार्थ तक ले गए। यह कला उन्हें एक कुशल वक्ता बनाती थी।

नामवरजी पढ़ाकू थे, यह सभी जानते हैं। अगर आप नामवर जी के घर गए हों तो,चारो तरफ किताबें और उनके बीच नामवरजी। निरन्तर पढ़ते हुए, सोचते हुए, पढ़े को आत्मसात करते हुए। पढ़ने वाले तो बहुत मिल जाएंगे, लेकिन उस पढ़े हुए का मौलिक से रुप से इस्तेमाल किस तरह करना है, इसे कोई नामवरजी

से सीखें। किसी भी विषय पर बोलना हो, वे पूरी तैयारी से मैदान पर उतरते थे और अपने मौलिक निष्कर्षों से सामने वाले को निरुत्तर कर देते थे। ऐसा कुछ, जो इसके पहले नहीं कहा गया। विद्वानों, विचारकों, रचनाकरों, गोष्ठियों और छात्रों के बीच समान रुप से लोकप्रिय। मुझे याद है–जे.एन.यू. में जब नामवरजी सेवा निवृत्त हुए, तो एक विदाई समारोह आयोजित किया गया। सोशल साइंस का सभागार खचाखच भरा था। पैर रखने की जगह नहीं थी। ऐसा लग रहा था पूरा कैम्पस नामवरजी को देखने सुनने के लिए इकठ्ठा हो गया है। प्रत्येक विचारधारा के छात्र और शिक्षक वहाँ उपस्थित थे। यह नामवरजी की लोकप्रियता का प्रमाण था। नामवर जी के आँख में आँसू आ गए। उन्होंने कहा कि पहली बार पता चला कि यह कैम्पस मुझे कितना प्यार करता है। कुलपति महोदय ने कहा – मुझे डर है कि मैं सेवा निवृत्त हुआ और मेरा भी विदाई कार्यक्रम अगर आयोजित किया गया तो क्या इस सभागार में दस लोग भी इकठ्ठा होंगे क्या? उनका एक प्रिय छात्र होने नाते मुझे हमेशा लगा कि नामवरजी अपने छात्रों के भीतर अपने से बड़े आलोचकों से टकराने का साहस पैदा करते थे। छात्रों को समझाते थे कि 'अविवेकपूर्ण सहमति से विवेकपूर्ण असहमति अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आचार्य शुक्ल के बाद नामवरजी अकेले ऐसे आलोचक हैं, जिनसे जुड़ना और टकराना–दोनों हिन्दी आलोचना के विकास के लिए आवश्यक है।

नामवरजी ने साहित्य और आलोचना को किताबों की दुनिया के साथ–साथ आमने सामने बैठकर बोलने –बतियाने वाला माध्यम बना दिया। आलोचना एक साहित्यिक सत्संग बन गया। उनका बोलना ही आलोचना का प्रामाणिक पाठ बन गया। कुछ आलोचकों को यह भी लगा कि नामवरजी ने आलोचना को एक सस्ता वाग्कर्म बना दिया है। तत्वान्वेषण और रचना के भीतर गहरे उतरकर समीक्षा करने की बारीक विकलता धीरे धीरे गायब हो रही है और एक आर्गनाइज आलोचना कर्म लोकप्रिय हो रहा है। हो सकता है यह सच भी हो, लेकिन इससे उलट एक सच यह भी है कि नामवरजी की आलोचना पद्धति ने लेखक और पाठक दोनों के भीतर से आलोचना के आतंक को समाप्त कर सह–संवाद के माध्यम से कृति को समझने का एक नया सर्जनात्मक औजार दे दिया, जो इसके पहले हिन्दी आलोचना में घटित नहीं हुआ था।

अपने साक्षात्कारों की पुस्तक 'कहना न होगा' में नामवर जी कहते हैं– बातें बातें बातें! बातें ही तो करता रहा हूँ अब तक। 'सचमुच नामवरजी बातों से ही अपना आलोचनात्मक विमर्श इस तरह खड़ा करते थे कि देखते ही देखते समूचे भारतीय साहित्य में आलोचना की एक नयी परंपरा दस्तक देने लगती। एक ऐसी आलोचना जो आलोचना के नए–पुराने सभी मुहावरे को बदल देती है और उससे आगे कुछ भी नया दिखाई नहीं देता।

वर्ष 2012 में शब्दम् द्वारा आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह के दौरान सम्मान पत्र भेंट करतीं शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज।

हिन्दी ही नहीं, आधुनिक भारतीय आलोचना के शिखर पुरुष **प्रो. नामवर सिंह** (जन्मः 28 जुलाई 1926, निधनः 19 फरवरी 2019) का 93 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। हिन्दी का प्रकाश स्तम्भ बुझ गया। शब्दम् परिवार की तरफ से नामवरजी को हार्दिक श्रद्धान्जलि एवं सादर नमन।

शिक्षक सम्मान समारोह

- **कार्यक्रम** : शिक्षक सम्मान समारोह
- **सम्माननीय शिक्षक** : डॉ. दीवान सिंह, श्रीमती गीता सिंह, श्री अशोक कुमार तिवारी
- **दिनांक** : 8 सितम्बर 2018 ● **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद।

शब्दम् द्वारा आयोजित शिक्षक दिवस समारोह वरिष्ठ शिक्षाविद् श्री उमाशंकर शर्मा की अध्यक्षता में 8 सितम्बर 2018 को हिन्द लैम्प्स के संस्कृति भवन में सम्पन्न हुआ।

सरस्वती पूजन के बाद डॉ. चन्द्रवीर जैन ने शब्दम् का परिचय दिया तथा अरविन्द तिवारी ने शब्दम् के वरिष्ठ पदाधिकारियों श्री नन्दलाल पाठक, श्री मुकुल उपाध्याय, श्री उदयप्रताप सिंह के संदेश पढ़कर सुनाये। इसके बाद श्री मंज़र–उल वासै ने सम्मानित होने वाले शिक्षक डॉ. दीवान सिंह, श्रीमती गीता सिंह, श्री अशोक कुमार तिवारी के शिक्षाक्षेत्र में किए गए विशिष्ट कार्यों का उल्लेख करते हुए उनकी प्रशस्तियों का वाचन किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री उमाशंकर शर्मा एवं शब्दम् सलाहकार समिति के डॉ. महेश आलोक, डॉ. रजनी यादव, श्री मंज़र–उल वासै, अरविन्द तिवारी और डॉ. चन्द्रवीर जैन ने सम्मानित होने वाले शिक्षकों को सम्मान पत्र, शॉल, नारियल, वैजयन्ती माला और धनराशि देकर समादृत किया।

संस्कृति भवन के खचाखच भरे हॉल में उपस्थित बुद्धिजीवियों और शिक्षाजगत के विद्वानों ने करतल ध्वनि से सम्मानित शिक्षकों का स्वागत किया। इस अवसर पर सम्मानित शिक्षकों ने अपने शैक्षिक अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया।

इस कार्यक्रम के अगले भाग में 'बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका' विषय पर एक परिचर्चा

समूह छायांकन।

डॉ. दीवान सिंह को सम्मानित करते शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

श्री अशोक कुमार तिवारी को सम्मानित करते शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

आयोजित की गई। परिचर्चा का प्रवर्तन करते हुए डॉ. महेश आलोक ने कहा कि नये परिवेश में शिक्षा बाजार के नियमों के अधीन हो गई है। उदारीकरण की अवधारणा ने शिक्षा को भी निजी हाथों में सौप दिया।

सरकारी शिक्षा व्यवस्था और निजी क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था में गहरी खाई उत्पन्न हो गई है। सरकारी स्कूलों में मिड–डे–मील, जनगणना, विभिन्न सर्वे आदि कार्यों में शिक्षक व्यस्त हो गया। ऐसे में शिक्षक बदले परिवेश में अपनी भूमिका का सही तरह से निर्वहन नहीं कर पा रहा है। आज शिक्षक स्वयं भययुक्त वातावरण में जी

श्रीमती गीता सिंह को सम्मानित करते शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य।

सभागार में उपस्थित आमंत्रित गण्यमान्य।

रहा है और बच्चों को भयमुक्त वातावरण देने का प्रयास कर रहा है; कैसा विरोधाभास है। इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए अरविन्द तिवारी ने कहा 'बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो गयी क्योंकि सोशल मीडिया, इलेट्रॉनिक मीडिया से समाज का वातावरण दूषित हो रहा है। आज छात्रों पर अच्छे केरियर का दबाव होने के कारण वे आत्महत्या तक कर रहे हैं। दूसरी ओर टैस्ट और परीक्षा स्थगित कराने के लिए साथी की हत्या कर रहा है। बलात्कार के आँकड़ों में नाबालिग द्वारा किए गए अपराध बढ़ रहे हैं। यह सब इसलिए हो रहा है कि शिक्षक और छात्र बाजार की जिंस बन गये हैं। इसलिए शिक्षक की नई भूमिका बेहद चुनौती पूर्ण है।'

श्री अशोक कुमार तिवारी।

डॉ. दीवान सिंह ने कहा कि स्वअनुशासन से शिक्षक को आत्मबल मिलता है। वह नये परिवेश में अपने को ढाल सकता है। शिक्षक को शिक्षण में आधारभूत मूल्यों पर जोर देना चाहिए और प्रकृति का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

डॉ. गीता सिंह ने कहा कि आनंददायी शिक्षण से नई चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। आनंददायी शिक्षण के लिए हमें बच्चों से घुलना मिलना होगा क्योंकि शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। बच्चों को छोटी गलती पर ही टोकना चाहिए। बड़ी गलती का इंतजार न करें।

श्रीमती गीता सिंह।

अशोक तिवारी ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। इस मंत्र के

डॉ. दीवान सिंह।

अनुसरण में शिक्षक की भूमिका बदलते हुए परिवेश में भी सकारात्मक रहती है क्योंकि शिक्षक, छात्र के मानसिक, आत्मिक और शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक में त्याग का सद्गुण हमेशा रहना चाहिए। चाहे जमाना कितना ही बदल गया हो। शिक्षक समाज के चरित्र का निर्माण करता है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री उमाशंकर शर्मा ने कहा कि बुद्धिजीवियों के कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। मैं आप सबका अभिनन्दन करता हूँ। भारतीय संस्कृति चूंकि संस्कारों से बनती है, अतः वह बदलते हुए परिवेश का सामना करने के लिए सक्षम है और शिक्षक भी चूंकि भारतीय संस्कृति से प्रेरणा लेते हैं इसलिए वे भी नई चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम हैं। शिक्षक के पास जो कुछ भी है वह उसका अपना है जबकि गूगल के पास फीड

की हुई सूचनाएं ही हैं। गलत फीडिंग हो गई तो गूगल गलत हो जाएगा। बदलते हुए परिवेश में हमारी संस्कृति और मान्यताओं पर खतरा उत्पन्न हो गया है। नैतिक मूल्य ही भारतीय संस्कृति का आधार हैं। हमारी संस्कृति कठिनाइयों में हमारा मार्गदर्शन करती है।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. रजनी यादव ने शब्दम् की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज के शिक्षा के प्रति जुनून को रेखांकित करते हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया कि वे इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. महेश आलोक ने किया। कार्यक्रम उपरांत सभी शिक्षक, गण्यमान्यों एवं छात्रों ने मिलकर 200 मौसमी के पौधों का रोपण भी किया।

कार्यक्रम में जी. के. गुप्ता, राधेश्याम यादव, राजेन्द्र सिंह, लक्ष्मीनारायण यादव, रविन्द्र रंजन, आर.सी. गुप्ता, दिनेश यादव, डॉ. डी. पी. सिंह, रामगोपाल उपाध्याय, ज्ञानेन्द्र जैन, आचार्य शिवचरन, प्रियम, एस.के. शर्मा, भूपेन्द्र यादव आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

शब्दम संस्था ने शिक्षकों को किया सम्मानित

बदले परिवेश में शिक्षकों के समक्ष चुनौती

बाजार के नियमों के अधीन शिक्षा: डॉ. महेश

श्रीमती गीता सिंह | मेरठ में 19 मई 1970 को श्री के.पी. सिंह (पिता) के गृह में जन्मी श्रीमती गीता सिंह ने हिन्दी साहित्य और बी.एड. परीक्षाएं क्रमशः 1995 और 1997 में उत्तीर्ण कीं। नगर के जाने माने स्तरीय ज्ञानदीप सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में 1997 से शिक्षिका हैं। वे हिंदी की शिक्षिका हैं और उन्हें ज्ञात है कि आज छात्रों के बीच हिंदी की दुर्दशा, वर्तनी और व्याकरण का ज्ञान न होने के कारण है। अतः वे हिंदी की व्याकरण, वर्तनी और लिपि पर बल देती हैं और शिक्षण कार्य में इतने परिश्रम और लगन से कार्य करती रही हैं कि उनके विद्यार्थियों का परीक्षाफल शतप्रतिशत रहता है। वे इस प्रकार की शिक्षक हैं जो इस तथ्य से परिचित हैं कि शिक्षक अनंत को प्रभावित करता है, वह कभी नहीं बता सकता कि उसका स्वभाव कहां तक जाता है। शिक्षा के विषय में उनका दृढ़ विश्वास है कि कर्तव्य, दया, परिश्रम और प्रेम से प्रेरित होकर किए कार्य उन कार्यों से श्रेष्ठ होते हैं जो केवल धन के लिए किये जाते हैं। पहली प्रकार के कार्य आत्मत्याग और साहस की प्रेरणा देते हैं जबकि दूसरी प्रकार के कार्य धन प्राप्ति के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। आप वे सत्कर्मशील व्यक्ति हैं जिनके लिए ऋग्वेद के अनुसार हवाएँ मधु बहाती हैं, नदियों में मधु बहता है तथा औषधियाँ मधुमय हो जाती हैं। सच्चे अर्थों में वे छात्र–छात्राओं में संस्कारों का सृजन करती हैं। समय की पाबंदी, निष्ठा, सकारात्मक सोच उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के अत्याज्य अंग हैं।

शब्दम् परिवार उनके सुखी–सम्पन्न स्वस्थ सुदीर्घ जीवन की कामना करता है।

श्री अशोक कुमार तिवारी | शिकोहाबाद में 29 जून 1955 को श्री रामप्रकाश तिवारी (पिता) के गृह में जन्मे श्री अशोक कुमार तिवारी ने हिन्दी और संस्कृत साहित्यों में परास्नातक की परीक्षाएँ क्रमशः 1979 एवं 1981 में उत्तीर्ण कीं। आप सन् 1975 से श्री गंगेश्वर संस्कृत पाठशाला शिकोहाबाद में सेवारत हैं। अब तक 43 वर्ष से इस संस्था की और इस संस्था के माध्यम से देववाणी संस्कृत की सेवा, केवल और केवल सेवा भाव से निरन्तर कर रहे हैं। यह विद्यालय गम्भीर आर्थिक संकट से गुज़र रहा है। विद्यालय में स्थान का भी बहुत अभाव है, साथ ही अन्य बुनियादी सामग्री भी उपलब्ध नहीं है। विद्यालय को कहीं से कोई अनुदान नहीं मिलता। सभी छात्रों–यहां तक कि आवासीय छात्रों से भी नाम मात्र को शुल्क लिया जाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में श्री अशोक कुमार तिवारी जैसे परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ एवं पूर्ण रूप से समर्पित शिक्षक ही विद्यालय की नौका को भीषण झंझावातों से बचाये हुए हैं। मन की प्रसन्नता, मौन, आत्म निग्रह और भाव शुद्धि को ही मानसिक तप कहा जाता है। श्री तिवारी सही अर्थों में ऐसे ही तपस्वी हें। उनकी पीड़ा है कि उनके विद्यालय में प्रायः वे ही किशोर विद्या–ग्रहण करने आते हैं जिनकी अन्यत्र कहीं सफल होने की संभावना नहीं होती। श्री अशोक तिवारी का विश्वास है कि जीवन को सफल बनाने हेतु शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है– हमारा सेवा भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागृत नहीं हुई तो काग़ज़ की डिग्री व्यर्थ है। उनकी निष्ठा कर्मण्यता एवं परिश्रम का अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि कुल 90 छात्र विभिन्न कक्षाओं में अध्ययनार्थ पंजीकृत हैं और अध्यापन के लिए एकमात्र शिक्षक और प्रधानाध्यापक मात्र अशोक कुमार तिवारी जी हैं। सुनने वाले लाखों हैं, सुनाने वाले हजारों हैं किन्तु श्री अशोक तिवारी जैसे करने वाले विरले हैं। अधिवर्षिता आयु पूरी हो जाने के उपरान्त भी आप केवल सेवा भाव से शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

शब्दम् परिवार आपके सुखी–सम्पन्न स्वस्थ सुदीर्घ जीवन की कामना करता है।

डॉ. दीवान सिंह | ग्राम तालिबपुर गोकुलपुर में 1 जनवरी 1955 को श्री कचमान सिंह (पिता) के गृह में जन्मे दीवान सिंह ने शिक्षण कार्य 5 फरवरी 1993 को प्राथमिक विद्यालय सरसौली (अरॉव ब्लॉक) से सहायक अध्यापक के रूप में प्रारम्भ किया। किशोरावस्था से ही आप ग्रामवासियों में माता–पिता के आज्ञा पालक के रूप में श्रेष्ठतम माने जाते थे। 5 सितम्बर 1993 को (शिक्षक दिवस) को वे प्रधान अध्यापक पद पर प्रोन्नत हो गये। शिक्षा कार्य करते हुए आपने अपना शोध कार्य किया और 1997 में आगरा विश्व विद्यालय ने पंत काव्य का छायावादी अध्ययन विषय पर डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि से अलंकृत किया। 16 मई 2011 को उनकी प्रोन्नति जूनियर हाई स्कूल के प्रधान अध्यापक के रूप में हो गयी। दिनांक 8 अगस्त 2013 को वे जूनियर हाई स्कूल भारौल स्थानान्तरित हो गये और वहीं से वे 31 मार्च 2017 को सेवा निवृत्त हुए। डॉ. दीवान सिंह ने अपना जीवन आर्थिक अभावों में प्रारम्भ किया। अध्यापक के रूप में वे उन विरले अध्यापकों में रहे जिनके लिए शिक्षा–दान, स्वभाव सिद्ध होता है। वे अपने गुण से ही ज्ञान–दान करते हैं, अपने अन्तःकरण से शिक्षा को वह सामग्री बनाते हैं जिसकी प्रेरणा से छात्रों में मनन शक्ति का संचार होता है। डॉ. दीवान सिंह जैसे आज कितने शिक्षक ऐसे हैं जो छात्र के तीन–चार दिन अनुपस्थित होने पर उसके गाँव में जाकर कुशल क्षेम पूछते हैं। उसकी समस्याओं को समझ यथा सम्भव उनका हल सुझाते हैं। समय की पाबन्दी इतनी कि अपने निवास से साइकिल द्वारा 18 किलोमीटर दूर भी विद्यालय समय से पूर्व पहुँच जाते, जबकि मार्ग के बीच में घुसकर नदी भी पार करनी पड़ती। विद्यालय समय के पश्चात् 18 किमी पुनः अपने निवास पर आना 6 वर्षों तक जारी रहा। आपकी कर्तव्य निष्ठा, परिश्रम एंव संस्कार से युक्त शिक्षा को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा विभाग ने शैक्षिक प्रशिक्षण हेतु 14 बार इलाहाबाद, 11 बार लखनऊ, 2 बार वाराणसी और एक बार चन्द्रशेखर विश्व–विद्यालय भेजा। आपने शिक्षक के रूप में छात्रों को पुस्तक ज्ञान तक सीमित नहीं रखा वरन् अपनी शिक्षा, अपने आचरण और अपने व्यवहार से छात्रों में सुसंस्कार निर्मित किये। सेवा निवृत्ति के पश्चात् भी वे नगर के ही एक महाविद्यालय में हिन्दी शिक्षक के रूप में यह मानते हुए कार्यरत हैं। शब्दम् परिवार उनके सुखी सम्पन्न स्वस्थ सुदीर्घ जीवन की कामना करता है।

छात्र सम्मान समारोह

- **कार्यक्रम** : हिन्दी दिवस सम्मान समारोह तथा 'रोजगार के अवसर एवं हिन्दी' विषय पर विचार गोष्ठी
- **दिनांक** :17 सितंबर 2018
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में शब्दम् द्वारा छात्र सम्मान समारोह एवं 'रोजगार के अवसर और हिन्दी' विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम के पहले चरण में उपर्युक्त विषय पर परिचर्चा हुई जिसमें वक्ताओं ने हिन्दी को रोजगार परक भाषा बनाये जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने शुरूआत करते हुए कहा कि जब तक हिन्दी कम्प्यूटर की भाषा नहीं बनेगी तब तक वह रोजगार की भाषा नहीं बन सकती। चर्चित व्यंग्यकार अरविन्द तिवारी ने कहा कि हिन्दी को आम आदमी, मजदूर और मध्य वर्ग ने जीवित रखा है, उच्च वर्ग ने नहीं, इसलिए हिन्दी को सशक्त बनाने के लिए मध्यम वर्ग और आम आदमी के भीतर हिन्दी के प्रति सम्मान भाव पैदा करना आज के समय की पहली जरूरत बन गयी है।

वरिष्ठ कवि कृपाशंकर 'शूल' ने कहा हिन्दी सिर्फ हमारी भाषा नहीं है, हमारी परम्परा है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए शिक्षक राजेन्द्र सिंह ने कहा कि जब हिन्दी का अस्तित्व नहीं बचेगा तो हिन्दी

विचार व्यक्त करते ठा. तारा सिंह इण्टर कॉलेज के शिक्षक श्री राजेन्द्र सिंह।

कैसे बचेगी। रोजगार से पहले छात्रों के भीतर हिन्दी का संस्कार देना जरूरी है। हिन्दी अध्यापक डॉ. हरिविलास ने कहा हिन्दी का प्रचार पहले हमें अपने घर से शुरू करना चाहिए। पूर्व

हिन्दी विषय में अधिकतम अंक लाने पर सम्मान पत्र प्राप्त छात्राएं।

प्रधानाचार्य लक्ष्मीनारायण यादव ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही कि हिन्दी में रोजगार के लिए सबसे पहले तो यह जरूरी है कि हम हिन्दी का सम्मान करना सीखें।

मुख्य वक्ता एवं कवि समीक्षक डॉ. महेश आलोक ने कहा कि हमें हिन्दी को बाजार की भाषा नहीं बनाना है बल्कि हिन्दी का इतना बड़ा बाजार

विचार व्यक्त करते शिक्षक।

विकसित करना है कि अंग्रेजी सहित अन्य भाषाएं इसकी अनुगामिनी बनें क्योंकि हिन्दी हमारी जातीय पहचान की भाषा है, हमारे आत्म सम्मान की भाषा है, हिन्दी में इस समय सबसे अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। शर्त ये है कि हमें अपने भीतर से हिन्दी को लेकर जो हीन भावना घर कर गई है इससे बाहर निकलना होगा। इसके पूर्व चर्चित कवि शब्दम् के उपाध्यक्ष उदयप्रताप सिंह एवं नन्दलाल पाठक तथा मुकुल उपाध्याय के ऑडियो एवं लिखित संदेश

हिन्दी विषय में अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान करते शब्दम् सलाहकार मण्ड़ल के सदस्य

पढकर सुनाये गये ।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक पाने के लिए 19 विद्यालयों के 60 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रख्यात हिन्दी सेवी मंजर–उल वासै ने कहा कि हिन्दी में रोजगार तभी सम्भव है जब हमें वर्ष में एक दिन हिन्दी दिवस मनाने की बजाय हम प्रतिदिन 'हिन्दी दिवस' मनायें जिससे हिन्दी हमारी संस्कार की भाषा बन जाय और छात्र–छात्राएं सही हिन्दी लिखने का अभ्यास करें।

कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं, अभिवावकों सहित गण्यमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने किया तथा संचालन अरविन्द तिवारी ने। हिंदी के मेधावी छात्र–छात्राओं द्वारा पौधे भी रोपित किए गए।

हिन्दी प्रश्नमंच

हिंदी प्रश्नमंच एक विस्तृत एंव विशाल क्षेत्र में सर्वाधिक लोकप्रिय और छात्र–छात्राओं के लिए व्यावहारिक रूप से लाभप्रद कार्यक्रम है। इसका आयोजन फिरोज़ाबाद जनपद और इसके आसपास जुड़े जनपदों के जूनियर हाईस्कूलों से लेकर स्नातकोत्तर महाविद्यालयों तक में किया जाता है।

इन कायक्रमों में हिन्दी भाषा और साहित्य को केन्द्र में रखते हुए अनिवार्य सामान्य ज्ञान के उन विषयों को समाहित किया जाता है जो देश–प्रेम, चरित्र–निर्माण और भारतीय–संस्कृति से संयुक्त रूप हों।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागी छात्र–छात्राओं की परीक्षा लेना न होकर उन महत्वपूर्ण विषयों से उन्हें परिचित करना होता है जिनका उनके स्तर के अनुपात में ज्ञान होने की उनसे अपेक्षा की जाती है। शब्दम् कार्यालय को प्रायः प्रत्येक विद्यालय से कार्यक्रम के विषय में सकारात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती हैं और ऐसे ही कार्यक्रम को विद्यालय में पुनः आयोजित करने का आग्रह भी।

शब्दम् द्वारा अभी तक लगभग 262 विद्यालय–महाविद्यालयों के 93 हजार छात्रा–छात्राओं के मध्य प्रश्नमंच कार्यक्रम आयोजित किये जा चुका हैं।

प्रश्नमंच पूछते श्री मंज़र–उल वासै एवं प्रश्न का उत्तर देने के लिए हाथ खड़ा करते विद्यार्थी।

वर्ष 2017–18 में भाग लेने वाले महाविद्यालय / विद्यालय

संत केशवानंद, अधमपुर, शिकोहाबाद
एस.आर.एस. ज्ञानेश्वरी इ. कॉलेज, आसफ़ाबाद, फिरोजाबाद
जवाहर नवोदय, गुरैलया सोयलपुर
पी.एस.ग्लोबल एकेडमी, कुबुतपुर, सिरसागंज
सरस्वती विद्या मंदिर, सिरसागंज
इन्दिरा मैमोरियल, सिरसागंज
शिवम् बायोटेक स्कूल, घिरोर, मैनुपुरी
राजकीय हाईस्कूल, मढैला घिरोर, मैनपुरी
श्री नबाव सिंह नारायणवती सरस्वती विद्या मंदिर, शिकोहाबाद
राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर, सिरसागंज द्वारा नारायण महाविद्यालय
पुरातन सरस्वती विद्या मंदिर, शिकोहाबाद
विश्व भारती इंटरनेशनल स्कूल शिकोहाबाद
ज्ञानदीप सीनियर सेकण्डरी स्कूल, शिकोहाबाद
सरस्वती विद्या मंन्दिर इण्टर कॉलेज केशवपुरम, शिकोहाबाद
लॉर्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
राजकीय इण्टर कॉलेज, नसीरपुर, शिकोहाबाद
श्री राज कॉन्वेन्ट इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद
श्री चन्दनलाल नेशनल इण्टर कॉलेज, कांधला, शामली
प्रगति सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, कांधला, शामली
ओ3म् डिग्री कॉलेज, एनएच–2, शिकोहाबाद
जे.एस. कॉलेज ऑफ एजूकेशन, शिकोहाबाद
आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद
पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद
नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद
संत जनू बाबा स्मारक महाविद्यालय, शिकोहाबाद
आदर्श कृष्ण इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद
शान्तिदेवी आहूजा महिला महाविद्यालय, शिकोहाबाद

विभिन्न विद्यालयों में प्रश्नमंच कार्यक्रम के समूह छायांकन।

चरित्र निर्माण कार्यशाला

विद्यार्थियों में वर्तमान शिक्षा के साथ–साथ संस्कार रोपित करने के उद्देश्य से शिक्षकों के साथ चरित्र निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रमुख रूप से श्री उमाशंकर शर्मा एवं डॉ. रजनी ने कार्यशाला का आयोजन किया।

चरित्र निर्माण कार्यशाला पी.एस. ग्लोबल एकेडमी, सर्वोदय ज्ञान स्थली, एस.आर.एस. मैमोरियल इंटरनेशनल स्कूल, संस्कृत पाठशाला में आयोजित की गई।

पी.एस. ग्लोबल एकेडमी विद्यालय के अध्यापकों एंव विद्यार्थियों के मध्य चरित्र निर्माण कार्यशाला।

एस.आर.एस.मैमोरियल इंटरनेशनल स्कूल के अध्यापकों एंव विद्यार्थियों के मध्य चरित्र निर्माण कार्यशाला।

संस्कृत पाठशाला के अध्यापकों एंव विद्यार्थियों के मध्य चरित्र निर्माण कार्यशाला।

सर्वोदय स्थली विद्यालय बाकलपुर के अध्यापकों एंव विद्यार्थियों के मध्य चरित्र निर्माण कार्यशाला।

काव्यात्मक शैली में संस्कार आरोपण कार्यशाला

- **कार्यक्रमः** काव्यात्मक शैली में संस्कार आरोपण कार्यशाला
- **दिनांकः** 15 सितंबर 2018 ● **स्थानः** संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर
- **अध्यक्षताः** श्री उदयप्रताप सिंह ● **विषय प्रवर्तनः** श्री उमाशंकर शर्मा

आमंत्रित कविगणः श्री प्रताप दीक्षित, श्री लाखन सिंह भदौरिया एवं डॉ दीन मोहम्मद 'दीन'

चरित्र निर्माण कार्यशाला के द्वितीय चरण में 'काव्यात्मक शैली में संस्कार अरोपण कार्यशाला' कार्यक्रम के अंतर्गत विश्व के कई देशों में भारतीय संस्कृति को पहुँचा चुके वरिष्ठतम् कवि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्री दीन मुहम्मद 'दीन', वरिष्ठ गीतकार एवं चर्चित कवि प्रताप दीक्षित एवं विख्यात कवि श्री लाखन सिंह भदौरिया ने भारत के आने वाले कल 'विद्यार्थियों' को काव्यात्मक विधि से संस्कारित किया।

कार्यक्रम में ज्ञानदीप सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, राज कान्वेंट पब्लिक स्कूल, आईवी इंटरनेशनल स्कूल, कुल भूषण आर्य इण्टर कॉलेज, गार्डेनिया इण्टर कॉलेज, लॉर्ड कृष्णा स्कूल, ब्लूमिंग बड्स, एस.आर.एस. मैमौरियल इंटरनेशनल स्कूल एवं संस्कृत पाठशाला के लगभग 700 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।

काव्यात्म शैली में संस्कार आरोपण करते श्री उदयप्रताप सिंह।

कार्यक्रम का दृश्य।

श्री उदयप्रताप सिंह पूर्व सांसद एवं उ.प्र. हिन्दी संस्थान के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष। सुप्रसिद्ध कवि, लेखक, लोकसभा, राज्यसभा एवं राष्ट्रीय पिछडा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य। सांसद के रूप में भारत सरकार की विभिन्न राजभाषा समितियों के सदस्य। 1993 में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय दल के अध्यक्ष तथा 'पेरामारीबू' विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य की मानद उपाधि। आगरा विश्वविद्यालय से एलुमिनियाई पुरस्कार एवं अक् जागृत मतदाता मंच, बनारस द्वारा राजनैतिक एवं नागरिक जीवन में सुचिता के लिए करेक्टर ट्री अवार्ड पुरस्कार, शिवमंगल सिंह सुमन, ब्रजविभूषण, शायरे इकजहती आदि पुरस्कारें से सम्मानित। उ.प्र. सरकार के प्रतिष्ठित सम्मान 'यश भारती' एवं साहित्य शिरोमणि से सम्मानित। विश्व के 25 से अधिक देशों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार।

राष्ट्रीय विचारधारा के उद्घोषक कवि। भाषा, कथन और शैली विचारपरक एवं बोलचाल तथा अपनापन लिए हुये हिन्दी गजल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर।

प्रवक्ता एवं प्राचार्य के पद पर कार्य करते हुए एक आदर्श शिक्षक के रूप में ख्याति । छात्रों में नैतिक मूल्यों का संवर्धन एवं अनुशासनप्रियता का संचालन। स्वभाव मधुर एवं आकर्षक। राजनीति के क्षेत्र में दलगत सीमाओं को तोड़कर प्रत्येक दल के राजनेता व्यक्तिगत स्तर पर इनके प्रशंसक एवं मित्र हैं।

श्री लाखन सिंह भदौरिया जन्म– 3 अगस्त 1928 जन्म स्थान– बरौली पार जिला इटावा उ0प्र0

शिक्षा– एम.ए. (हिन्दी संस्कृत) साहित्य रत्न, साहित्यालंकार

लेखन विधाएः– गीत, मुक्तक, कविता, निबन्ध, संस्मरण आदि।

सम्प्रति– संस्कृत अध्यापक पद से सेवा निवृत्त

प्रकाशित रचनाएं– आर्य मित्र, आर्य मर्यादा, कल्पना, वीणा, राष्ट्रधर्म, सुकवि विनोद, मानस चन्द्र, मानस संगम, अखण्ड ज्योति, पांचजन्य, सार्वदेशिक, आर्य सेवक आर्य जगत् क्रान्ति स्वर, संकल्प, हितोपदेशक हिन्दुस्तान, जनसत्ता एवं दैनिक जागरण के अतिरिक्त अन्य अनेक पत्रिकाओं तथा दर्जनों काव्य संकलनों में रचनाओं का प्रकाशन।

पता– सौमित्र कुटी, भोजपुरा, मैनपुरी (उ.प्र.) मोबाइल– 9411060165

श्री प्रताप दीक्षित जन्म स्थानः ग्राम–परा, जनपद–भिण्ड, म.प्र. जन्म तिथिः 7 जनवरी 1932 ई.

प्रकाशित रचनाएँः बॉसों के वन, अंजुरी भर बाजरा, हमाई बोली हमाए गीत (काव्य संग्रह)।

सम्पादनः 'विवरणिका' मासिक पत्रिका–दूर संचार विभाग, आगरा का कई वर्ष तक सम्पादन।

सम्मानः नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा, अ. भा. मीरा साहित्य संगम धौलपुर, डॉ. कमलेश स्मृति प्रकाशन संस्थान आगरा, भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, संस्कार भारती आगरा, कविरत्न सत्य नारायण स्मृति संस्थान, तोरा आगरा, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण उपाधि से सम्मान।

विधाः छंद, गीत, गज़ल, दोहा, व्यंग्य–गीत, मुक्त छंद, लेख, ब्रजभाषा आदि में साधिकार लेखन।

सम्प्रतिः स्वतंत्र लेखन काव्य, स्वाध्याय कवि सम्मेलन, काव्य गोष्ठियों में नियमित सक्रियता।

पताः 34–ए, इंदिरा कॉलौनी, भेगीपुरा शाहगंज, आगरा–282010 दूरभाष– 8077812094

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्रीमद्भगवद्गीता परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी

● **कार्यक्रम** : श्रीमद्भगवद्गीता परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी

● **दिनांक** :21 दिसम्बर 2018 ● **स्थान** : प्रह्लादराय टीकमानी सरस्वती इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद।

● **अध्यक्षता** : श्री उमाशंकर शर्मा **मुख्य वक्ता एवं प्रश्नकर्ता** : डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

शब्दम् ने दिया विद्यार्थियों के गीता के माध्यम से जीवन को जीने की कला का संदेश

गीता विषाद से लेकर प्रसाद तक की कराती है यात्रा

चरित्र निर्माण कार्यशाला के तृतीय चरण में विद्यार्थियों को श्रीमद्भगवद्गीता के सार से जोड़ते हुए संस्कारित किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों से श्रीमद्भगवद्गीता पर आधारित 25 प्रश्न पूछे गये। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के अंदर श्रीमद्भगवद्गीता या अन्य जिज्ञासाएं जागृत करना था।

कार्यक्रम में डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने कहा कि गीता आज के परिपेक्ष्य में प्रत्येक समस्या का समाधान देती है। जीवन जीने की कला, तनाव, अवसाद से मुक्ति के सूत्र गीता में मिलते हैं। जीवन अनंत है वह छोटी–छोटी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हानि–लाभ, सुख–दुःख, जीवन–मृत्यु उस अनंत जीवन को प्रभावित नहीं कर सकते। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को पलायन से निकालकर कर्तव्य रूपी युद्ध में लगा दिया। आज के युवा भी जीवन के प्रति पलायन वादी न बनकर आने वाली समस्याओं से जूझें। गीता विषाद से लेकर प्रसाद तक की यात्रा कराती है।

इससे पूर्व कार्यक्रम का प्रारम्भ शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज के संदेश से हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि गीता कोई किताब नहीं है, यह एक वैज्ञानिक दृष्टि है, गीता जीवन में आनंद पैदा करती है। गीता जीने का प्रबन्ध सिखाती है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों से कहा कि गीता के इस ज्ञान को प्रतिदिन याद रखें कि आपको अपनी संगति बहुत अच्छी रखनी है। किसी पर अन्याय नहीं करना है। अपने गुरुजनों का आदर करना है। आशीर्वाद लेना है जिससे जीवन में आप आगे बढ़ सकें।

अध्यक्षता कर रहे उमाशंकर शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि जीवन का संघर्ष महाभारत के संघर्ष की तरह है जिसमें गीता राह दिखाती है और उन्होंने विद्यालय परिवार के प्रति आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम में मंज़र–उल वासै, डॉ. महेश आलोक, अरिवन्द तिवारी, डॉ. चन्द्रवीर जैन, लक्ष्मीनारायण यादव, टीकमानी विद्यालय प्रबंधक रामनारायण मित्तल, प्रधानाचार्य रविन्द्रपाल सिंह, शिक्षकों में उत्तम सिंह उत्तम, रविन्द्र मोहन शर्मा उपस्थित रहे।

श्रीमद्भगवद्गीता परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी में छात्रों से प्रश्न करते डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया।

भक्ति संगीत

- **कार्यक्रम** : 'प्रह्लाद भक्तिसूत्र' होली महोत्सव
- **दिनांक** : 5 मार्च 2018 ● **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद
- **प्रह्लाद भक्ति पर प्रवचन** : पं. इन्द्रेश उपाध्याय शास्त्रीजी

समय का सदुपयोग ही मंजिल पाने का मूलमंत्र श्रीमदभागवत कथा, साक्षात भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन कराती है। समय का सदुपयोग करना सीखो, समय का सदुपयोग करने वाले कभी असफल नहीं होते हैं। समय, संपत्ति और सम्मान का जिसने आदर किया है, उसका हर किसी ने सम्मान किया है। यह प्रवचन पं. इंद्रेश उपाध्याय ने होली महोत्सव के अवसर पर संस्कृति भवन सभागार में प्रस्तुत किए।

पं. इंद्रेश उपाध्याय शास्त्रीजी ने प्रह्लाद भक्तिसूत्र पर बोलते हुए कहा कि पाप का पिता कौन है? अगर पाप नहीं होता, सब जगह

'प्रह्लाद भक्तिसूत्र' पर बोलते पं. इंद्रेश उपाध्याय

प्रवचन से भाव विभोर होकर नृत्य की मुद्रा में श्री शेखर बजाज एवं श्रीमती किरण बजाज

सुखसमृद्धि होती। पाप का पिता लोभ है; लोभ के कारण ही संसार में पाप बढ़ते हैं। जब मनुष्य के अंदर लालसा, लालच का वास बढ़ जाता है और सत्यमार्ग से इच्छाएँ पूरी न होने पर वह पाप करना शुरू कर देता है। अर्थात् लोभ को अपने विचारों में स्थान नहीं देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भगवान भक्ति का भूखा होता है, वह अपने भक्त को कभी दुःखी नहीं देख सकता है। अगर कोई प्रेम से भगवान का स्मरण करता है तो भगवान साक्षात उसके सामने प्रकट होते हैं।

समय का सही उपयोग करना प्रह्लाद सूत्र है जबकि समय का दुरुपयोग करने वाला हिरण्यकशिपु है। भक्त प्रह्लाद सत्य का रूप हैं तो हिरण्यकशिपु पाप का रूप हैं।

बजाज इलेक्ट्रिकल्स के चेयरमेन श्री शेखर बजाज एवं शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने अतिथियों का आभार प्रकट किया।

श्रद्धेय श्री इन्द्रेश उपाध्याय जी का परिचय

वैदिक अध्यात्मिक व्यास परंपरा की उत्ताल उर्मियों के रसमय संवाहक श्रद्धेय श्री इन्द्रेश उपाध्यायजी का जन्म विश्व प्रसिद्ध भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुर जी) के यहाँ बृज वसुन्धरा की पावन राजधानी वृंदावन में दिनांक 7 अगस्त 1996 को हुआ। श्रीमती नर्मदादेवी उपाध्याय एवं श्रद्धेय (ठाकुरजी) की मेधावी संतान ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा के समय से ही पू0 गुरुदेव एवं अपने पिताश्री को मनोयोग से श्रवण किया।

आपके भागवत शुभारंभ के समय भारत के शीर्ष संत स्वामी गुरुशरणानंद जी महाराज, स्वामी राजेन्द्र दास, देवाचार्यजी महाराज, योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज, पू0 रमेश भाई ओझा (भाई श्री), पू. मुरारी बापू आदि महापुरुषों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

समूह छायांकन

संस्कृति एवं प्रकृति सेवा भाव के अंतर्गत विचार गोष्ठी

- **कार्यक्रमः** संस्कृति एवं प्रकृति सेवा भाव के अंतर्गत विचार गोष्ठी – चरित्र निर्माण, नशा एंव तम्बाकू मुक्त समाज
- **मुख्य अतिथिः** एडीशनल सीएमओ, डॉ. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव
- **स्थान :** संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद

शब्दम् एवं पर्यावरण मित्र संस्थाओं द्वारा जनपद फिरोजाबाद के प्रधानाचार्य, प्राचार्य, शिक्षकों, समाजसेवी संगठनों, साहित्यकारों, पत्रकारगण एवं प्रबुद्धजनों की उपस्थितिमे बुलाकर चरित्र निर्माण तथा नशा एवं तम्बाकू विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि एडीशनल सीएमओ डा. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हम परिणाम की तरफ जायें और हमें अच्छे परिणाम लेने के लिए सबसे पहले अपने बच्चों के लियें समय निकालना होगा खासकर, बच्चे की मां को। मां से बड़ा शिक्षक कोई नहीं हो सकता। अपराधी से घृणा नहीं करनी चाहिए, घृणा अपराध से करनी चाहिये। बच्चों को समय दें, उनसे बाते करें, उन्हें एक मित्र के रूप में समझें। उनके साथ मित्रवत व्यवहार करें, उनकी समस्या सुने और उनका निराकरण करें।

विचार गोष्ठी में पर्यावरण मित्र अध्यक्ष ने मुम्बई से भेजे अपने ऑडियो संदेश में कहा कि शिक्षकों और बुद्धिजीवियों को इस पर गहन चिंतन करना होगा कि कैसे आरम्भ से ही बच्चों को साक्षरता के साथ जीवन मूल्यों की घुट्टी पिलाई जाए।

अन्य आमंत्रितों में उमाशंकर शर्मा, मंजर–उल

समूह छायांकन।

वासै, रजनी यादव, अरविन्द तिवारी, चन्द्रवीर जैन, डॉ डी. पी. सिंह, बहादुर सिंह निर्दोषी, उदयवीर शर्मा, राजेन्द्र सिंह, ओमप्रकाश बेबरिया, शास्त्री शरद कृष्ण, सुरेश कन्हैयानी, रत्नेश कुमार कुलश्रेष्ठ, नवीन मिश्रा, अशोक कुमार, आर. बी. लाल, सतेन्द्र सौली, एसआरके महाविद्यालय फिरोजाबाद से समाजशास्त्र विभागाअध्यक्ष डॉ. उग्रसेन पाण्डेय, हरिओम प्रकाश आचार्य, दिनेश कुमार यादव, संजय यादव, पुष्कर तिवारी, लक्ष्मीनारायण यादव, योगाचार्य डॉ. पी. एस. राना, राजेश गुप्ता, ब्लूमिंग बड्र्स प्रबंधक राज पचौरी, पालीवाल पब्लिक स्कूल से शिक्षिका प्रभा गौर, सुचेता शर्मा, आर. सी. गुप्ता, आर. एन. यादव, रामप्रकाश गुप्ता आदि ने अपने विचार रखे। संचालन दीपक औहरी ने किया।

मीटिंग से निकले कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुः

1. जुलाई माह से प्रत्येक विद्यालय के साथ मिलकर शब्दम् एक प्रकोष्ठ बनायेगा जिसमें विद्यालय के एक शिक्षक को नियुक्त किया जाय। इन शिक्षिकों के साथ प्रत्येक माह एक बैठक कर आगे अभियान की योजना तैयार की जायेगी तथा पूर्व की समीक्षा की जायेगी।

2. ब्लूमिंग बड्र्स के प्रबन्ध निदेशक ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाएगा कि कोई शिक्षक किसी प्रकार के नशे में लिप्त न हो।

3. संयुक्त परिवार संस्कार की रक्षा करते थे परन्तु आज एक परिवार मजबूरी है अतः प्रत्येक माता–पिता को बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार रखना चाहिए, जिससे बच्चे दिन अपने साथ हुए घटनाक्रम का जिक्र अभिवावकों से कर सकें।

4. नशा मुक्त समाज के अंतर्गत हमें नशे करने वाले लोगों का सामाजिक बहिष्कार करना होगा।

5. बच्चों को साहित्य, नाटक, कहानियां, जीवन मूल्यों और पूर्वजों के चरित्र से जुड़ना हो जिससे बच्चों के हृदय में भारतीय संस्कृति का समावेश हो सके।

6. सभी को दोहरे चरित्र से बचना होगा।

7. विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की एक कक्षा अवश्य होनी चाहिए।

संस्कृति एवं प्रकृति के महत्व पर प्रकाश ड़ालते एडीशनल सीएमओ डॉ. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव तथा उपस्थित अतिथिगण।

मॉरीशस और भारतीय संस्कृति

– डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

विश्व हिन्दी सम्मेलन में इस बार मॉरीशस की धरती को नमन करने का स्वर्णिम अवसर भारत सरकार के आमंत्रण के द्वारा मुझे मिला तो मैं बहुत रोमांच से भर गया था, बहुत उत्सुकता थी उस धरती पर जाकर भारतीय भाषा और संस्कृति के विविध रंगों से परिचय प्राप्त करने की। हम जब मॉरीशस के पोर्टलुईस हवाई अड्डे पर उतरे तो हमारी अगवानी में अंतरराष्ट्रीय संबंध परिषद की सुश्री तुलसीजी और सुश्री वंदनाजी गाड़ी सहित उपस्थित थी। औपचारिकता के बाद हम लोग होटल हिल्टन के लिये चले तो मार्ग में गन्ने के खेत मिले, लगा जैसे भारत के ही किसी गांव से हम लोग गुजर रहे हैं। बस अन्तर था तो यह कि सड़क चिकनी और बिना गड्ढे वाली थी। गन्दगी तो दूर–दूर तक नहीं थी। भारत के कश्मीर जैसे सुन्दर दृश्य भी दिखाई दे जाते थे। हमको बताया गया कि अंग्रेज कोलकाता, मद्रास और बम्बई से भारतीयों को मजदूरी के लिये यहाँ लाये थे। ये मजदूर बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे। ये सब यहाँ एग्रीमेंट (एग्रीमेंट को यहाँ गरिमिट बोलते थे) पर लाए गये थे अतः गिरिमिटिया कहलाये। जब ये लोग यहाँ आये तो अपने साथ रामचरित मानस और हनुमान चालीसा के साथ भारत के लोकगीत और वहाँ की संस्कृति भी लाये और उसे उन्होंने बहुत सलीके से सहेजा। अंग्रेज अधिकारी इन प्रवासी मजदूरों पर बहुत अत्याचार करते थे, इनको सीसा लगे कोड़ों से पीटा जाता, शाम को जब ये लोग छिपकर पत्थरों के टीले की आड़ में हिन्दी की वर्णमाला बच्चों को सिखाते, उनको रामायण और महाभारत की कहानियां सुनाते तो इनको यातनाएं दी जातीं। अंग्रेजों के भय से ये गन्ने के खेतों में छिप जाते, लेकिन अगली शाम फिर इकट्ठे हो जाते और बच्चों को राम–कृष्ण की कहानी सुनाते, अपनी भाषा की वर्णमाला सिखाते, 'रामा सुमति देहु–क ख ग घ अंगा'। अमानवीय अत्याचार सहकर भी ये लोग अपनी भाषा अपनी संस्कृति अपने देवी–देवताओं को भूले नहीं, इन्होंने अपनी आस्था के बल पर तालाब में गंगा को प्रकट कर लिया और गंगा तालाब का निर्माण किया। इन्होंने अपने परिश्रम से विश्व नक्शे पर बिन्दु के समान छोटे से 39 मील लंबे और 29 मील चौड़े नन्हें टापू को स्वर्ग के समान सुन्दर बनाया। कहीं मंदिर, कहीं कथा मण्डप, और उनके परिसर में कहीं धानी, कहीं अंगूरी, कहीं फिरोजी सौंदर्य से सुसज्जित रंग छटाएं, चारों ओर गहरा नीला फेन उगलता चट्टानों से टकराता हाहाकार करता महासागर, और उनके सुन्दर तट, सब इनके श्रम बिन्दु से स्नात हुए! मोहित करने वाले झरने और उनके उद्यान सब भारतीयों के खून पसीने के जीवन्त स्मारक बने। इन्होंने बहुत कष्ट उठाकर अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को बचाया। परिणामस्वरूप अब यहाँ हिन्दी भाषा और संस्कृति बहुत गहरी जड़ें जमा चुकी है, हिन्दी भाषी जनसंख्या बहुमत में है, डच और अंग्रेजी बोलने वाले भी हिंदी को मान देते हैं। यह यूं ही नहीं है कि मॉरीशस में भारतीय मूल के लोग ही पीढ़ियों से सत्ता संभाल रहे हैं; यह भी संयोगवश नहीं है कि विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ बार–बार अपने देश को पुत्र और भारत को पिता का संबोधन देकर सम्मानित करते हैं।

मॉरीशस में भारत सरकार के सहयोग से हिन्दी सचिवालय स्थापित है जो हिन्दी को वैश्विक स्तर पर प्रचारित–प्रसारित करता है। हिंदी संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बने इसके लिये भी सशक्त प्रयास किये जा रहे हैं।

यहाँ पर ही आचार्या प्रतिष्ठाजी योग भी सिखाती हैं, इंदिरा गाँधी सांस्कृतिक केन्द्र में संगीत और शास्त्रीय नृत्य भी सिखाया जाता है।

यहाँ एक विशेष सत्र में हस्तक्षेप करते हुए मैंने शिकोहाबाद से संचालित संस्था 'शब्दम' का उल्लेख किया और बताया कि किस तरह से यह संस्था हिंदी भाषा और संस्कृति की सेवा में संलग्न है, ग्रामीण कवि सम्मेलन हिन्दी प्रश्न मंच, संगीत और शास्त्रीय नृत्य जैसे कार्यक्रमों का सन्दर्भ भी मेरे द्वारा दिया गया।

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। ग्यारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन इसी विचार पर केंद्रित रहा। भाषा के उन्नयन के लिए अनेक योजनाओं का उद्घोष हुआ है। देखना यह है कि क्रियान्वयन कितना होता है। किन्तु यह तो तय है हिन्दी का विकास रथ अब रुकने वाला नहीं है। जय हिन्दी! जयहिन्द!!

–डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

शब्दम् जानकीदेवी बजाज ग्रीष्मकालीन शिविर

- **कार्यक्रम :** शब्दम् जानकीदेवी बजाज ग्रीष्मकालीन शिविर
- **दिनांक :** 21 मई से 30 मई 2018 ● **स्थान :** संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद।
- **शिक्षक :** श्रीमती सुषमा मिश्रा (विशेषज्ञ, सिलाई कला), श्रीमती पूजा गौड़ (विशेषज्ञ, सौंदर्यकला), श्री दीपक सिंह (प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा – विशेषज्ञ बैकिंग), श्रीमती आरती यादव (अधिवक्ता जिला न्यायालय, विशेषज्ञ महिला अधिकार– सरकारी योजनाओं की जानकारी), श्री नीरज पाठक (विशेषज्ञ, पाककला), योगाचार्य श्री शिवरतन सिंह (भारत स्वाभिमान समिति, पंतजली योगपीठ)

सुदूर ग्रामीण अंचल की बालिकाओं एवं महिलाओं को शब्दम् जानकीदेवी बजाज ग्रीष्मकालीन शिविर के माध्यम से स्वावलम्बन की दिशा में बढ़ते कदम.....

शब्दम् के दस दिवसीय शिविर में ग्रामीण अंचल की उन बालिकाओं और महिलाओं को स्वावलम्बन के मार्ग पर बढ़ना सिखाया गया। जिन बालिकाओं को घर से निकलने पर भी मना किया जाता हो। सर्वे के दौरान शब्दम् की टीम अपने उद्देश्यों के साथ ऐसे ग्रामीण परिवार के मध्य पहुँची जहाँ बालिकाओं और महिलाओं को समाज की पुरानी कुरीतियों के चलते पढ़ने–लिखने तक के लिए भी बाहर नहीं जाने दिया जाता है।

शब्दम् टीम ऐसे परिवारों से जुड़ी और बालिकाओं तथा महिलाओं को ग्रीष्मकालीन शिविर तक लेकर आयी।

इस समर–कैम्प में सिलाईकला के माध्यम से छात्राओं को ब्लाउज तथ बैग बनाना सिखाया गया। सौंदर्यीकरण के माध्यम से मेनीक्योर, पेडीक्योर, ब्लीच, फेशियल, आइब्रो एंव मेकअप की विधियाँ बतायी एवं सिखायी गयीं। मेहँदी कला में अरेबियन एंव इंडियन कलाएँ, बैंक प्रबन्धक द्वारा सामान्य बैंकिंग की जानकारी तथा

जूसर मिक्सर ग्राडर के बारे में जानकारी देते बजाज इलेक्ट्रिकल्स के अधिकारी नीरज पाठक।

ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण देतीं शिक्षिका।

अखबार की कटिंग पर कपड़ा काटना सीखतीं छात्राएँ।

महिला वकील द्वारा महिलाओं के कानूनी अधिकार बताए गए। इनके अतिरिक्त संस्था ने पर्यावरण मित्र में चलायी जा रहीं गतिविधि 'पर्यावरण कब तक सहेगा, कभी तो कुछ कहेगा' के बारे में बताकर छात्राओं को इस मुहिम से जोड़ा।

अंतिम दिन पर्यावरण मित्र की दूसरी गतिविधि तम्बाकू निषेध की पीपीटी छात्राओं को दिखायी गयी एवं तम्बाकू से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी गई। छात्राओं ने कहा कि वे अपने परिवार को तम्बाकू–मुक्त परिवार बनाएंगी।

अंतिम दिन छात्राओं ने सुन्दर वस्त्र जैसे– ब्लाउज, बैग तथा सौदर्यीकरण में सजना सँवरना, मेहँदी लगाना एवं साड़ी पहनने की कला का रंगारंग माध्यम से प्रस्तुतीकरण दिया।

कार्यक्रम के अंत में प्रत्येक छात्रा ने समर कैम्प के दौरान या अपने जीवन के कुछ अनुभव रखे।

कु. गीताजंलि ने अपने परिवार की आपबीती सुनाते हुए कहा कि तम्बाकू ने मेरे चाचा की जान ले ली। मेरे चाचा बहुत तम्बाकू खाते थे हम सबने खूब रोका, लेकिन वह नहीं माने अंततः उन्हें कैंसर हुआ और पिछले वर्ष ही उनकी असमय मौत हुई। आज मेरी चाची और दो बच्चे तम्बाकू के राक्षस के शिकार हैं। यह कहते हुए गीतांजली मंच पर ही रोने लगीं।

कु. रीमा दिवाकर ने कहा कि मैं हरगनपुर की निवासी हूँ जो यहाँ से लगभग 15 किलोमीटर है, मैंने अपने जीवनकाल में शिकोहाबाद प्रथमबार देखा है। मैं शब्दम् की आभारी हूँ मैं आगे भी शब्दम् से जुड़ी रहूंगी।

कु. प्रीती ने कहा कि हमारे आत्मविश्वास को और मजबूत किया है। देहाती क्षेत्र में लड़कियों को लड़कों से कम माना जाता है परन्तु ऐसा है नहीं हमें प्यार से अपने घर वालों को समझाना होगा और जीवन को अपने अनुसार ही जीना

बैंकिंग की जानकारी देते बैक ऑफ बड़ौदा के प्रबन्धक दीपक सिंह।

प्राप्त प्रशिक्षण से तैयार बैगों एंव वस्त्रों के साथ छात्राएँ।

मेहँदी प्रशिक्षण के दौरान समूह छायांकन।

योग क्रिया करतीं बालिकाएं।

होगा।

आरती सिंह ने कहा कि मैं एक हाउस वाइफ हूँ इस तरह के कैम्प में पहली बार शामिल हुई हूँ। काश यह समर कैम्प कुछ और दिन चलता।

इस प्रकार अनेक छात्राओं ने अपनी–अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

पॉवर प्वाइन्ट प्रजेंटेशन के माध्यम से शब्दम् गतिविधियों की जानकारी लेतीं बालिकाएं।

प्रमाण पत्र के साथ छात्राओं व शिक्षकाओं का समूह छायांकन।

महिलाओं को पाक कला का प्रशिक्षण दिया

बालिकाओं को सिखाए स्वावलंबी बनने के गुर

छात्रा, शब्दम् समर कैम्प

महिलाओं को समझाए कानूनी अधिकार

महिला दिवस

- **कार्यक्रम** : महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के सामान्य अधिकार एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी
- **दिनांक** : 11 मार्च 2018 ● **मुख्य वक्ताः** श्रीमती किरण बजाज, श्री मंज़र–उल वासै एवं श्री आर.सी. गुप्ता
- **स्थान** : हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन

शब्दम् द्वारा महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे विभिन्न सिलाई केन्द्रों की छात्राओं एवं शिक्षिकाओं को हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के सामान्य अधिकारों, सरकारी योजनाओं, दुर्घटना–जीवन बीमा एवं बैकिंग की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में शब्दम् सलाहकार

महिलाओं को उनके अधिकार की जानकारी देतीं शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज।

समूह छायांकन।

समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं एल.आई.सी के पूर्व प्रथम श्रेणी अधिकारी मंज़र–उल वासै ने दुर्घटना एवं जीवन बीमा की विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि हमारे जीवन में कोई भी दुर्घटना बताकर नहीं आती है और जब अचानक आती है तो हमें उसके बाद संभलने के लिए बीमा के माध्यम से ही आर्थिक मदद मिलती है। उन्होंने आग, एलपीजी गैस, बस, ट्रेन एवं वाहन दुर्घटना जैसी बीमा की योजनाओं की जानकारी दी।

पूर्व प्रबन्धक, बैक ऑफ बड़ौदा आर.सी. गुप्ता ने महिलाओं को बैकिंग के अंतर्गत बचत खाता खोलने के लिए फॉर्म भरने के तरीके एवं उसमें लगने वाले आवश्यक प्रपत्रों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि प्रत्येक महिला को बैंक में आर. डी. खोलकर मासिक बचत करना सीखना चाहिए। आर. डी. में जमा किए गए बचत के पैसों से बैंक आपको अच्छा खासा लोन भी उपलब्ध कराती है जिससे आप अपना व्यवसाय चालू कर, आत्मनिर्भर बन सकते हैं। आर.डी. को बाद में एफ.डी. में भी बदला जा सकता है।

शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने बालिकाओं एवं महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि महिलाओं जितना त्याग और समपर्ण संसार में कोई नहीं कर सकता। उन्होंने सिलाई केन्द्र की छात्राओं से कहा कि वह अच्छी तरह सिलाई सीखें और स्वावलम्बी बनें तथा शिक्षिकाओं को बताया कि वह छात्राओं में सिलाई के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी ड़ालें।

संविधान द्वारा दिए गए महिलाओं को सामान्य अधिकारों की जानकारी दी गई। संस्था ने सभी को संविधान द्वारा दिए गए इन अधिकारों का छपा हुआ पत्र भी उपलब्ध कराया।

कार्यक्रम में सौरामगढ़ी, दतावली, फतेहपुर कर्खा, रुकनपुर एवं हिन्द परिसर स्थित सिलाई केन्द्रों की लगभग 100 छात्राओं ने भाग लिया।

महिलाओं को किया जागरूक

महिला दिवस पर शब्दम् ने दी अधिकारों की जानकारी

महिला दिवस के उपलक्ष्य में शब्दम् ने दीं महिला अधिकारों की जानकारी

राखी मिलन समारोह

● **कार्यक्रम** : राखी मिलन समारोह

● **दिनांक** : 25 अगस्त 2018 ● **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स शिकोहाबाद।

रक्षाबन्धन के उपलक्ष्य में हिन्द परिवार को लोगों द्वारा राखी मिलन समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में शब्दम् जानकी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित राखी बनाओ प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा तैयार राखियों को बहनों ने भाई की कलाई पर बांधा।

जैविक सामग्री से तैयार की गई राखियों की जानकारी भी सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों को दी गई।

इस आयोजन में पर्यावरण मित्र, शब्दम्, कल्पतरु एवं कॉलोनी के स्वयंसेवक, सुरक्षा गार्ड, के साथ–साथ हिन्द लैम्प्स के वरिष्ठ अधिकारियों एवं हिन्द लैम्प्स कॉलोनी की बहनों ने भाग लिया।

राखी बाँधती बहनें।

समूह छायांकन।

समूह छायांकन।

'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी

● **कार्यक्रम** : 'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी के अंतर्गत बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो?
● **दिनांक** : 24 अगस्त 2018 ● **स्थान** : संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स शिकोहाबाद।

शब्दम्, वर्ष 2013 से रक्षाबन्धन के उपलक्ष्य में 'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी का आयोजन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था ने 'बहन बचाओ अभियान' विचार गोष्ठी के अंतर्गत बहन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो? (पारिवारिक–जन्मसिद्ध एवं कानूनी, सांविधानिक अधिकारों की रक्षा करने में भाई के सहयोग की भूमिका क्या हो ?) पर चर्चा की।

इस विषय पर गोष्ठी के लिए संस्था ने चार घटक अभिवावक, शिक्षक, भाई–बहन एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री उमाशंकर शर्मा ने की।

कार्यक्रम में सलाहकार समिति से डॉ. अजय कुमार आहूजा, मंज़र–उल वासे, अरविन्द तिवारी, डॉ. चन्द्रवीर जैन, दिनेश यादव, उदयवीर शर्मा, रविन्द्र रंजन, ज्ञानेन्द्र जैन, महेश सिंह, आर.के. सिंह, रोमिल, योग गुरू शिवरतन सिंह, भोलू मिश्रा, आजाद यादव, गीता सिंह, प्रज्ञा यादव, सुषमा मिश्रा, सीमा शाक्या, ओमप्रकाश, रोमिल तथा कॉलोनी की अधिकतर महिलाएं उपस्थित रहीं।

विचार गोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत करते श्री अरविन्द तिवारी एवं श्री मंज़र–उल वासे

समूह छायांकन।

जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

पिछले चौदह वर्षों से शब्दम् सिलाई केन्द्र लगभग 3000 बालिकाओं/महिलाओं को सिलाई कला में निपुण बनाकर स्वावलम्बी बना चुका है।

अभी तक संस्था नगला बांध, बढ़ाईपुरा, झमझमपुर, बैरई, मेवली, नगला सुन्दर, खतौली, रसूलपुर, नगला टीकाराम, छोटी सियारमऊ, बड़ी सियारमऊ, नगला लोकमन, नगला जवाहर, नगला ऊमर, बड़ी गैलरई, नगला सीताराम, हरगनपुर, नगला चन्दा, लाछपुर, छेछापुर, सुजावलपुर, मेवली, छरीछप्पर, नसीरपुर, फतेहपुर कर्खा, आदि ग्रामों में सिलाई केन्द्र संचालित कर चुकी है।

वर्तमान में संस्था द्वारा कुल छः सिलाई केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं, जिसके अंतर्गत दो सिलाई केन्द्र हिन्दलैम्प्स परिसर में, तीन सिलाई केन्द्र ग्रामीण अचंल के ग्राम हरिया, ग्राम

ग्रामीण सिलाई केन्द्र में सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त करती छात्राएँ।

अपने विचार व्यक्त करती छात्रा।

सिलाई कला सीखने के बाद अपने हाथों से तैयार किये वस्त्रों के साथ छात्राएं।

दतावली एवं ग्राम ब्रह्माबाद तथा एक सिलाई केन्द्र शिकोहाबाद रुकनपुर मुहल्ले में चलाया जा रहा हैं।

सिलाई केन्द्र में सिलाई प्रशिक्षण सीख रहीं कुछ छात्राओं के विचार....

मेरे परिवार में मेरे पति पढ़े–लिखे नहीं हैं वह मजदूरी का कार्य करते हैं। 'शब्दम' सिलाई केन्द्र के माध्यम से मैं सिलाई सीखकर, परिवार के खर्चों में सहयोग एवं बच्चों को उच्च शिक्षा देना चाहती हूँ।

–मेघा, ग्राम दखिनारा

शब्दम् सिलाई केन्द्र से सिलाई सीखने के साथ ही मैंने बाहर की भी सिलाई करना शुरू कर दिया है। मुझे विश्वास है कि मैं अब कुछ कर सकती हूँ।

–ममता, ग्राम डा़हिनी

होली की रंगोली में निखरे अबीर और गुलाल के रंग

चित्रकला में छात्राओं ने उकेरे मनोभाव

रंगोली बनाओ प्रतियोगिता में दिखाई प्रतिभा

सिलाई केन्द्र में विभिन्न अवसरों पर हुई प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रम।

जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र के संदर्भ में सिलाई प्रशिक्षण के साथ–साथ विभिन्न अवसरों पर रंगोली प्रतियोगिता, प्राकृतिक रंग प्रशिक्षण, राखी प्रतियोगिता इत्यादि के माध्यम से उनको प्रशिक्षित एवं उत्साह वर्धन भी किया जाता है।

इसी के अंतर्गत होली के उपलक्ष्य में छात्राओं ने रंगोली बनाओ कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक सुन्दर रंगोली बनाई। रंगोली प्रतियोगिता में ग्रामीण अंचल से आने वाली बालिकाओं और महिलाओं ने अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करते हुए सुन्दर रंगोलियाँ बनाकर कार्यक्रम में आए अतिथियों को आश्चर्य चकित कर दिया। रंगोली बनाओं कार्यक्रम में भाग लेनी वाली सभी छात्राओं को पुरस्कार स्वरूप एक–एक केची प्रदान की गई।

शब्दम् द्वारा संचालित सिलाई केन्द्रों पर रंगोली प्रतियोगिता के दृश्य।

सिलाई केन्द्र में विभिन्न अवसरों पर हुई प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रम।

इसी कम में सिलाई केन्द्रों में प्रशिक्षण ले रही छात्राओं को होली के उपलक्ष्य में प्राकृतिक रँगों को बनाने की विधि का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत चुकन्दर, पालक एवं हल्दी चन्दन से प्राकृतिक रंग बनाकर उसमें डाली जाने वाली सामग्री की मात्रा एंव प्रयोग के बारे में पूर्ण जानकारी दी गई। सभी छात्राओं को प्राकृतिक रंग बनाकर होली खेलनी की शपथ दिलायी गई।

प्राकृतिक रंग बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करती छात्राएं।

रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में सभी सिलाई केन्द्रों की छात्राओं के मध्य अपशिष्ट सामग्री से राखी बनाओ प्रतियोगिता का अयोजन कराया गया, जिससें छात्राओं ने सुंदर राखियां तैयार कीं। इस तरह के आयोजनों से छात्राओं अंदर छुपी कला को जागृत होती तथा उनके अंदर आत्मविश्वास पैदा होता है।

रक्षा बंधन के अवसर पर सभी सिलाई केन्द्रों पर आयोजित राखी प्रतियोगिताओं के दृश्य।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्त्री सशक्तिकरण

जानकी बालिका महिला पाठशाला – निरक्षरता से साक्षरता की ओर

- **कार्यक्रम** : रूकनपुर बालिका–महिला पाठशाला का शुभारम्भ
- **दिनांक** : 1 मई 2018 • **स्थान** : मदरसा अब्दुल करीम एकेडमी, रुकनपुर, पड़ाव शिकोहाबाद।

जानकीदेवी बालिका पाठशाला का उद्देश्य शिक्षा की धारा से छूटी बालिका एवं महिलाओं को साक्षर बनाना। अभी तक 11 गाँवों में जानकी बालिका पाठशाला को खोला गया है।

शिकोहाबाद को पूर्ण साक्षर बनाने के उद्देश्य से शब्दम् संस्था द्वारा पड़ाव–रुकनपुर मुहल्ले में बालिकाओं एवं महिलाओं के लिए निःशुल्क बालिका–महिला पाठशाला का आयोजित की गई।

जानकीदेवी शब्दम् बालिका–महिला पाठशाला ने शिक्षा की धारा से छूट चुकी महिलाओं– बालिकाओं को अक्षर ज्ञान एवं अंक ज्ञान देकर साक्षर बनाया।

पाठशाला में अपने विचार व्यक्त करतीं नगर पालिका अध्यक्ष मुमताज बेगम।

समूह छायांकन।

'मिशन साहसी'

● **कार्यक्रम** : 'मिशन साहसी'

● **दिनांक** : 30 अक्टूबर 2018 ● **स्थान** : गांधी पार्क, फिरोजाबाद।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा फिरोजाबाद गांधी पार्क में आयोजित 'मिशन साहसी' कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद के विभिन्न शहरों से लगभग 2000 छात्राओं ने भाग लिया। मिशन साहसी के अंतर्गत छात्राओं को स्वयं अपनी रक्षा करने के लिए सेल्फ डिफेंस का पिछले सात दिनों तक प्रशिक्षकों के माध्यम से अपने–अपने विद्यालयों में प्रशिक्षण दिया गया। उस प्रशिक्षण का प्रदर्शन सभी छात्राओं ने जिले के सुरक्षा प्रमुख एसएसपी के सामने किया। एसएसपी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यद्यपि पुलिस विभाग प्रत्येक की सुरक्षा के लिए दृढ़संकल्पित है फिर भी प्रत्येक महिला को अपनी सुरक्षा हेतु मार्शल आर्ट सीखनी चाहिए। उन्होंने वूमेन्स हेल्पलाइन नम्बर 1090 के बारे में सबको बताया।

इस कार्यक्रम को शिकोहाबाद की तरफ से शब्दम् का सहयोग रहा है।

कार्यक्रम में मुख्यरूप से फिरोजाबाद महापौर नूतन राठौर, एसएसपी सतेन्द्र पटेल, देवीचरण अग्रवाल, मनोरमा गुप्ता, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नगर अध्यक्ष आर.बी. पाण्डेय एवं संयोजक मयंक तिवारी उपस्थित रहे।

अपनी कला की प्रस्तुति देती छात्राएं।

शक्ति प्रदर्शन का अभ्यास करती बालिकाएं।

जानकीदेवी बजाज की 126 वीं जयन्ती

- **कार्यक्रमः** 'स्वच्छता एवं बचत' परिचर्चा
- **मुख्य वक्ताः** श्री मंजर–उल वासै एवं श्री एस.के.शर्मा **अध्यक्षः** श्री उमाशंकर शर्मा
- **स्थान :** संस्कृति भवन, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद

जानकी देवी बजाज की 126वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 'स्वच्छता एवं बचत' परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शान्तिदेवी आहूजा महाविद्यालय की छात्राओं ने जानकीदेवी आंवला वाटिका एवं पर्यावरण मित्र द्वारा संचालित किये जा रहे वनों में भ्रमण कर, पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लिया। तद्पोरान्त लघु फिल्म के द्वारा जानकी देवी का जीवन वृत्त प्रस्तुत किया गया जिसे श्रोताओं ने करतल ध्वनि से सराहा।

जानकीदेवी बजाज के बचत स्वभाव पर 'कबीर के पद 'काहेरी नलिनी तू कुम्हलानी, तेरे नाल सरोवर पानी, को उद्घृत करते हुए मंजर–उल वासै ने कहा कि श्रीमती जानकीदेवी बजाज, अकूत सम्पत्ति की स्वामिनी होते हुए भी उससे असम्प्रवत्त रहीं और युवा अवस्था से लेकर अंत तक अपना सारा जीवन सादगी, मितव्ययता, दानशीलता और समाज सुधार में व्यतीत किया।

परिचर्चा में अध्यक्षीय सम्बोधन करते श्री उमाशंकर शर्मा।

समूह छायांकन।

सभागार में उपस्थित गण्यमान्य नागरिक।

जानकीदेवीजी के जीवनक्रम पर लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करती छात्राएं।

इसी क्रम में जानकीदेवी बजाज के स्वच्छता स्वभाव पर प्रकाश ड़ालते हुए एस. के. शर्मा ने कहा कि जानकीदेवी बजाज जब आश्रम में रहा करतीं थीं तब वह सभी प्रकार की सफाई को स्वयं किया करती थीं। उन्होंने छात्राओं को इंगित करते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छता हेतु 5 एस कॉन्सेप्ट जापानी पद्धति के बारे में बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री उमाशंकर शर्मा ने किया। इस अवसर पर शब्दम् सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ. महेश आलोक, अरविन्द तिवारी तथा प्रमुख गण्यमान्यजनों अशोक अनुरागी, डॉ. डी.पी. सिंह, लक्ष्मीनारायण यादव, रवीन्द्र रंजन, डॉ. दीवान सिंह, नवीन मिश्रा, अनीता रानी शर्मा, आर.एन यादव, आर. सी. गुप्ता, शिवरतन सिंह, शशिप्रभा यादव, पुष्कर तिवारी, महेश चन्द्र मिश्र, ओमप्रकाश बेबरिया, उदयवीर शर्मा इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

'स्वच्छता एवं बचत' विषय पर परिचर्चा

जानकी देवी बजाज की 126 वीं जयंती पर हुआ कार्यक्रम

जानकी देवी बजाज की 126 वीं जयंती पर हुआ कार्यक्रम

जानकी देवी की जयंती पर हुई गोष्ठी

जानकीदेवी बजाज की आत्मकथा के अंग्रेजी संस्करण का विमोचन

जानकीदेवी की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' के अंग्रेजी संस्करण 'माई लाइफ्स जर्नी' (My Life's Journey) का विमोचन। (दायें से) अमिता हरिभक्ति, अध्यक्ष–पुरस्कार समिति, पवित्रा सुंदरेशन (पुरस्कार विजेता 2018)–संस्थापक व प्रबंध निदेशक, विंध्या ई–इन फोमीड़िया प्रा. लि., मोहना नायर–अध्यक्ष, आयएमसी लेडिज विंग, मुकुल उपाध्याय–सीईओ, टचस्टोन एडर्व्हटाइजिंग, सुदीप्ता व्यास–लेखिका एवं अनुवादक, 'माई लाइफ्स जर्नी', राहुल बजाज, अध्यक्ष, बजाज समूह, सुपर मॉडल व अभिनेता मिलिन्द सोमन, आकाश शाह–प्रबंध निदेशक, जैको पब्लिशिंग हाउस, शेखर बजाज –अध्यक्ष, बजाज इलैक्ट्रीकल्स, मुख्य अतिथि सफ़ीना हुसैन–संस्थापक व कार्यकारी निदेशक, एज्युकेट गर्ल्स, वनिता भंडारी–उपाध्यक्ष, आयएमसी लेड़िज विंग।

जानकीदेवी की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' के अंग्रेजी संस्करण 'माई लाइफ्स जर्नी' (My Life's Journey) का विमोचन 8 जनवरी 2019 को 26वें आई.एम.सी– लेडीज़ विंग जानकीदेवी बजाज पुरस्कार समारोह में किया गया। यह अवसर जानकीदेवी बजाज की 125वीं जयंती का भी था। पर्यावरण मित्र तथा शब्दम् पत्रिकाओं की लेखिका सुदीप्ता व्यास ने यह अनुवाद किया है तथा विमोचन सुपर मॉडल व अभिनेता मिलिन्द सोमन ने किया। उन्होंने बजाज परिवार के राहुल बजाज, शेखर बजाज को पुस्तक की प्रथम प्रतियाँ भेंट की। बजाज समूह के मुखिया राहुल बजाज ने पुस्तक का प्राक्कथन भी लिखा है जिसमें उन्होंने कहा है कि स्वतंत्रता आंदोलन में जानकीदेवी बजाज के योगदान के कारण उन्हें राष्ट्रीय महल की महिलाओं में प्रमुख स्थान मिला है। राहुल बजाज ने उनके निःस्वार्थ व प्रेरणादायक जीवन को भी स्मरण किया है।

My Life's Journey जानकीदेवी के अनुभवों का

'माई लाइफ्स जर्नी' के साथ किरण बजाज एवं लेखिका सुदीप्ता व्यास।

विस्तृत विवरण है कि किस तरह जाबरा, मध्य प्रांत के धनी व्यवसायी की साढ़े आठ वर्षीय अबोध–सरल बालिका का विवाह वर्धा के धनाढ्य बजाज परिवार के पुत्र जमनालाल से हुआ, किस तरह एक वैभव पूर्ण सेठानी एक समाज सेविका के रूप में परिवर्तित हो गई

जिसने अपनी धन–दौलत, गहने, गाड़ी सब कुछ त्याग दिया और जिसके पास संपत्ति के नाम पर एक खादी की थैली और कुछ निजी वस्तुएं ही थीं। पुस्तक में मनोरंजक जिक्र है हमारे राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के बीच कैसा मित्रता का संबंध था, उनका एक दूसरा ही पहलू सामने आता है।

यह पुस्तक पाठकों को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन महत्वपूर्ण नाजुक क्षणों में भी खींच लाती है जैसे दांडी मार्च, असहयोग आंदोलन, बापू बलिदान खादी का जन्म आदि, साथ ही कैसे इन घटनाओं ने जानकी देवी के जीवन की पृष्ठ भूमि तैयार की। दर असल एक महिला, एक माँ, एक सामाजिक उद्यमी, एक सुधारक के रूप में जानकीदेवी के दृष्टिकोण से ये ऐतिहासिक क्षण सजीव हो उठते हैं, साथ ही एक ऐसी महिला नेता के दृष्टिकोण से भी जिन पर देश के सर्वश्रेष्ठ तीन गुरुओं का असर पड़ा– गांधी, विनोबा और जमनालाल बजाज, पुस्तक में छपे चित्र भी पाठक को उस काल का सजीव कहानी सुनाते हैं।

बजाज समूह के प्रमुख राहुल बजाज ने पुस्तक विमोचन के अवसर पर कहा, ''इस आत्मकथा के अंग्रेजी अनुवाद की कल्पना मेरी भाभी किरण बजाज के मन में सन 1992 में आई.एम.सी. लेडिज़ विंग के ग्रामीण महिला उद्यमी पुरस्कार की स्थापना के समय से ही चल रही थी। आज के समय जब हम महिला सशक्तिकरण, उद्यमी–सशक्तिकरण की बात कर रहे हैं, एक ऐसी प्रेरणादायी व उद्यमी महिला की कहानी सुनना और सुनाना ही चाहिए जो किसी स्कूली शिक्षा के बगैर स्वयं महिलाओं का सशक्तिकरण करती रहीं।

विमोचन के अवसर पर किरण बजाज ने कहा, 'हमें गर्व है कि हमें यह मौका मिला जब हम सुदीप्ता द्वारा सुंदर ढंग से अनूदित जानकीदेवी जी के अनुकरणीय अनुभवों की कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं। यह मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे उनका स्नेह, आतिथ्य और समाज के प्रति निःस्वार्थ भाव का प्रत्यक्ष अनुभव मिला। इन गुणों का व्यापक प्रसार हो ताकि लोग जानकीदेवी जी के व्यक्तित्व और सशक्तिकरण की उनकी भावना से परिचित हो सकें तथा समाज में विवेकपूर्ण परिवर्तन ला सकें। मेरा मानना है कि यह पुस्तक एक अच्छा साधन सिद्ध होगी।

विमोचन समारोह में बोलते हुए पुस्तक की अनुवादक सुदीप्ता व्यास ने कहा ''मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे यह अवसर मिला कि मैं एक साधारण बालिका के प्रमुख राष्ट्रभक्त के रूप में ढल जाने की यात्रा का वर्णन कर सकी। मैं मानती हूँ कि इस कहानी में किसी भी पीढ़ी को प्रेरित करने की शक्ति है। इस तरह यह पुस्तक उपयुक्त समय में प्रकाशित हुई है। ताकि लोग समझ सकें। जो स्वतंत्रता हम आज भोग रहे हैं उसे पाने के पीछे क्या–क्या कुरबानियाँ लोगों ने दीं। जानकदेवी की इस आत्मकथा का अनुवाद की पूरी प्रक्रिया का एक परिवर्तनकारी असर मेरी सोच पर पड़ा कि किस तरह की जद्दोजहद हमारे राष्ट्रीय नेताओं को करनी पड़ी जसके कारण हमें एक स्वतंत्र व स्वाधीन भारत मिला।''

इस पुस्तक के जरिये युवा वर्ग के दिलों तक पहुँचने के किरण बजाज के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सुदीप्ता व्यास ने इस कहानी का अनुवाद इस तरह किया कि उसकी मौलिकता तथा कहानी का मूल तत्व बना रहे। पाठक संग्राम काल की कहानी, त्याग तथा आज़ादी के जज़्बे में खिंचता चला जाये पुस्तक में जानकीदेवी के नेतृत्व गुणों का वर्णन है साथ ही उस करुणा का

श्रीमती पवित्रा सुंदरेशन–संस्थापक व प्रबंध निदेशक, विंध्या ई–इन फोमीडिया प्रा. लि. को जानकीदेवी बजाज पुरस्कार देते हुए मुख्य अतिथि, सफीना हुसैन, संस्थापक व कार्यकारी निदेशक, एज्युकेट गर्ल्स।

भी जो किसी भी काल के लिए स्वागत योग्य है।

पुरस्कार समारोह हमें पुस्तक विमोचन के पश्चात् श्रीमती पवित्रा सुंदरेशन–संस्थापक व प्रबंध निदेशक, विंध्या ई–इन फोमीडिया प्रा. लि. को ग्रामीण क्षेत्र में उद्यमशीलता के लिए आई.एम.सी. लेडीज़ विंग जानकीदेवी पुरस्कार 2018 दिया गया।

जैको बुक्स द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक रू. 499 में प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं के यहां तथा फ्लिप कार्ट व अमेज़न पर ऑनलाइन उपलब्ध है।

पवित्रा वाय. सुंदरेशन 2006 में बैंगलोर में प्रारम्भ की गई विंध्या ई–इंफोमीडिया की संस्थापक व प्रबंध निदेशक हैं जो एक बीपीओ संस्था है जिसका मिशन व्यापार एवं लोकोपकार को सामाजिक उत्थान के लिए साथ लाना है.

इनकी संस्था का प्रमुख उद्देश्य अवसर से वंचित लोगों को रोज़गार के माध्यम द्वारा एक मंच प्रदान करना तथा ग्रामीणों, विकलांग लोगों, सामाजिक रूप से असहाय महिलाओं और ऑटिज़्म के सीमावर्ती मामलों के रोज़गार पर ध्यान केंद्रित करना है. इनका मुख्य उद्देश्य अशक्तजनों को मुख्यधारा में लाना तथा परिणामस्वरूप उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाते हुए, जीवन में आत्मसम्मान और गरिमा प्राप्त करवाना है.

पहली पीढ़ी की उद्यमी के रूप में एक विनम्र शुरुआत करते हुए, पवित्रा ने 5 कर्मचारियों के साथ आरंभ करते हुए कंपनी को 1600 कर्मचारियों तक बढ़ाया है. इनकी कंपनी की विशेषता यह है की कुल कर्मचारियों में 62% से अधिक विकलांग (पीडब्ल्यूडी– पीपल विथ डिसएबिलिटी) हैं और कुल कर्मचारियों में 58% महिलाएँ शामिल हैं.

पवित्रा का यह अटूट विश्वास है कि महिला उद्यमिता सिर्फ़ परिवार ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज व समुदाय के आर्थिक कल्याण में प्रबल योगदान कर सकती है. इनकी संस्था अशक्त महिलाओं, विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं को रोज़गार प्रदान करने में प्राथमिकता देती है ताकि वे आत्मनिर्भर बनकर अपनी पहचान बनाएँ एवं स्वयं को सशक्त करें; साथ–ही–साथ अपने परिवार के भविष्य को भी साकार कर सकें.

अपनी इस अनूठी यात्रा के 12 वर्षों में, पवित्रा की संस्था ने पीडब्लूडी को मुख्य कार्यबल के रूप में रखते हुए उच्च गुणवत्ता वाले और लागत–प्रभावी संपर्क केंद्र और डेटा समाधानों की पेशकश करके बैंगलोर और हैदराबाद के बीपीओ उद्योग में स्वयं की एक अलग पहचान बनाई है.

पवित्रा की अद्वितीय ''फॉर प्रॉफिट'' संस्था ने वॉइस एवं नॉन–वॉइस बिज़नेस प्रोसेस सेगमेंट में कई वर्टिकल्स को सेवाएँ प्रदान करते हुए असाधारण ख्याति अर्जित की है. इनका मिशन पीडब्लूडी कर्मचारियों को दीर्घकालीन पेशेवर जीवन उपलब्ध करवाना और उन्हें देश व दुनिया की अर्थव्यवस्था के निर्माण में भागीदार बनाना है. पवित्रा का लक्ष्य 2020 तक 5000 अशक्तजनों को नियुक्त करना है.

पुस्तक चर्चा

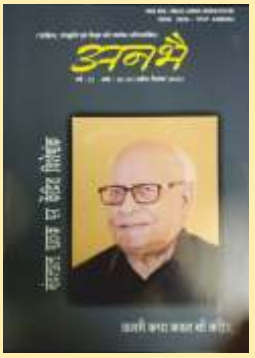

हिन्दी ग़ज़ल को नन्दलाल पाठक की देन

त्रैमासिक पत्रिका 'अनभै' का नंदलाल पाठक पर केन्द्रित अंक।

इसका विमोचन 1 दिसम्बर 2018 को मुम्बई विश्व विद्यालय में हुआ।

सम्मान

शब्दम् उपाध्यक्ष **श्री उदयप्रताप सिंह** को 1 नवम्बर 2018 का ग्रेटर नोएडा में 100 घण्टों के अविरल कवि सम्मेलन–मुशायरा कार्यक्रम में सम्मानित किया गया तथा उन्होंने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भी की। यह कार्यक्रम गिनीज़ बुक में दर्ज़ है।

सम्मान

'शब्दम्' सलाहकार मण्डल के वरिष्ठ सदस्य और हिंदी प्रश्नमंच उपसमिति के अध्यक्ष **मंज़र-उल वासे** को अखिल भारतीय साहित्य परिषद न्यास, नई दिल्ली द्वारा 'गीता के विविध भाष्यों में निहित संदेश' विषय पर लघु शोध प्रस्तुत करने और श्रीमद्भगवद्गीता के किसी भी अन्य विषय पर व्याख्यान देने के लिए अखिल भारतीय सम्मान प्रदान किया गया। शब्दम् संस्था उनको इस महती उपलब्धि के लिए बधाई देती है।

डॉ. रजनी यादव को रेवाण्डा के हार्ड कमिश्नर अर्नेस्ट राइयुको, साउथ कोरिया के पीस अवार्ड राजदूत प्रो. एसएस भाखरी, मिनिस्टरी ऑफ स्किल्स डेवलपमेंट भारत सरकार के प्रो. जीसी ढेका ने संयुक्त रूप से नई दिल्ली में पीएचडी की मानद उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया।

सौ साहित्यकारों की सूची में अरविंद तिवारी का नाम

शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य और प्रसिद्ध व्यंग्यकार **अरविंद तिवारी** को 2018 की राही हिंदी के सौ समकालीन विश्व लेखकों में 92 वें स्थान पर रखा गया है। इनकी व्यंग्य से सम्बन्धित 13 पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें से अधिकांश पुरस्कृत हैं। अनेक राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित अरविंद तिवारी कई बड़े अखबारों में व्यंग्य कालम लिख रहे हैं।

अनंत.....

(1977 - 2018)

देशभक्त, प्रकृति प्रेमी, वन-संरक्षक, वन-प्रवर्तक, स्वप्न दृष्टा

किरण बजाज (अध्यक्ष पर्यावरण मित्र एवं शब्दम्) व शेखर बजाज (अध्यक्ष, बजाज इलैक्ट्रीकल्स) के पुत्र, अनंत, बजाज इलैक्ट्रिकल्स के प्रबंध संचालक थे। अपने छोटे जीवन काल में वह अपनी अनेक प्रतिभाओं व क्षमताओं के लिए जाने जाते थे, एक सफल उद्यमी से परे जाकर उन्होंने अपनी एक अनोखी पहचान बनाई थी। वह पूजा के पति, गीतिका के स्नेहिल भाई और वनराज के वत्सल थे। इन चित्रों में अनंत की कहानी अंकित है।

अनंत ने प्राथमिक शिक्षा, 'कथीड्रल एंड जॉनकेनन स्कूल' मुंबई में प्राप्त की और फिर वह प्रसिद्ध दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति द्वारा आंध्रप्रदेश में स्थापित ऋषि वेली स्कूल में गये। 'एच. आर. कॉलेज कॉमर्स मुंबई से उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की।

बाद में, बजाज इलेक्ट्रिकल्स में प्रशिक्षण के दौरान प्रसिद्ध 'एस.पी. जैन इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट' के एम.बी.ए. प्रोग्राम में उनका चुनाव हो गया। फिर सन् 2013 में उन्होंने प्रतिष्ठित' हार्वर्ड बिजनेस स्कूल' बॉस्टन, यूएसए के 'ओपीएम' (ओनर प्रेसीडेंट मैनेजमेंट) कार्यक्रम में अध्ययन किया।

सन् 2005 में वह बजाज इंटरनेशनल प्रा. लि. के जनरल मैनेजर नियुक्त हुए। उनके नेतृत्व में इसके निर्यात विभाग– बजाज इंटरनेशनल– ने आई.टी. से लेकर सौर ऊर्जा जैसे विविध उत्पादों में सफल पैठ की। 'सनसोको' (Sunsoko) नामक उनके प्रकल्प का उद्देश्य ऊर्जा की बचत था।

अनंत ने बजाज इंटरनेशनल को एक इकाई के रूप में BEAMS (बजाज एंटरटेनमेंट, आर्ट्स एंड स्पोर्टस) की शुरूआत की, यह एक ऐसा मंच था जिसमें उत्तम दर्जे के मनोरंजन, कला, संगीत और खेलों की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित तथा प्रबंधित किया जाता था। इस मंच ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर युवा प्रतिभाओं के पोषण और उन्हें अवसर देने का प्रयास किया।

फरवरी 2006 को अनंत को बजाज इलैक्ट्रिकल्स के एग्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर के तौर पर बोर्ड में सम्मिलित किया गया, 2012 में ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर और अंत में 2018 में मैनेजिंग डायरेक्टर के रूप में पदोन्नत किया गया।

बजाज इलैक्ट्रिकल्स में अपनी अभिनव सोच के चलते अनंत 'डिजिटल' दुनिया की गहराई में छलाँग लगाई जबकि अधिकतर कंपनियां इस विषय में अभी केवल विचार तक ही सीमिति थीं। अपने स्वप्न को साकार करने के लिए अनंत ने 'एबी स्क्वायर' की शुरूआत की जो कि कंपनी का एकीकृत आर. एण्ड डी. प्रकल्प है और जिसे अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सराहा गया है। कंपनी की कुछ महत्त्वपूर्ण पहलों को एक सूत्र में पिरोने के पीछे अनंत ही प्रेरणा शक्ति रहे जैसे 'थ्योरी ऑफ कॉस्ट्रेंट' (TOC) और 'रेंज रीच एक्सपेंशन प्रोग्राम' (PREP) को शुरू करके इन्हें अमलीजामा पहनाना वितरण प्रणाली के इस अद्भुत स्वरूप के कारण कंपनी की वितरण व्यस्था और पहुँच में शानदार इज़ाफ़ा हुआ है।

अनंत एक गर्वीले भारतीय थे और अपने तिरंगे को प्रदर्शित करने का कोई न कोई बहाना ढूंढ ही

लेते थे। मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा के रूप में उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में 100 ध्वज स्तम्भ बनवाये। उनकी देश भक्ति की भावना कंपनी के चाल–चरित्र में रच–बस गई थी। 2018 में किये गये एक सर्वेक्षण में बजाज इलेक्ट्रिकल्स को सर्वाधिक देशभक्त 'ब्रांड' के रूप में मत मिले।

अपनी माता किरण बजाज के साथ–मुंबई मेराथॉन में, अनंत की मान्यता थी कि 'केवल यह पृथ्वी ही हमें समान रूप से प्राप्त है' इसी सोच से बजाज इलैक्ट्रिकल्स द्वारा संचालित कई अभिनव कार्यक्रमों और प्रवृत्तियों का जन्म हुआ।

अनंत की कल्पना एक भेदभाव रहित विश्व की थी। समाज–कल्याण की भावना को उन्होंने सौर–लालटेनों, साइकिलों के मुफ़्त वितरण द्वारा व्यक्त किया पर्यावरण–अनुकूल जीवन शैली के प्रसार के लिए सौर–ऊर्जा से लैस सामूहिक केंद्रों की स्थापना भी इसी भावना का प्रतीक है।

जल संचयन तथा स्वच्छ पेयजल में उनका दृढ़ विश्वास था।

वन्यजीवन के प्रति प्रेम के कारण अनंत ने पर्यावरण–अनुकूल पैकेजिंग को अपनाया ताकि कागज की बचत हो। नीति थी – शून्य अपव्यय।

'जो पेड़ लगाता है वह स्वयं को नहीं, दूसरों को प्यार करता है।' अनंत को पर्यावरण–अनुकूल भेंट पसंद थी बेहतर विश्व की रचना के लिए वह पेड़ लगाने में रुचि रखते थे।

अनंत ने अंतरराष्ट्रीय टाइगर सप्ताह प्रायोजित किया ताकि बाघ–संरक्षण संबंधी समस्याएं उजागर हो सकें। 'अनंत बजाज बाघ–संरक्षण पुरस्कार' उनकी स्मृति में स्थापित किये गये हैं। ये दो पुरस्कार एक तो वैज्ञानिक क्षेत्र के बाघ संवर्द्धक को दिया जायगा और दूसरा व्यवसायिक समुदाय के बाघ–प्रेमी को। घोड़ों से भी उन्हें बहुत प्रेम था। साथ ही गाय व कुत्तों के प्रति भी उनमें करुणा थी।

वन्य जीवन तथा प्रकृति के प्रति अनंत का प्रेम सर्व विदित है। हमारे पर्यावरण, विशेषकर वन पशुओं की दुर्लभ प्रजातियों के बारे में अपने ज्ञान से वह अपने सहयोगियों, मित्रों और पर्यावरणविदों को आश्चर्य में डाल देते थे।

प्रकति के अजूबे देखने के लिए अनंत ने अलास्का से लेकर न्यूज़ीलैंड तक की यात्राएं कीं।

अनंत को सब खेलों से लगाव था। लेकिन एक सच्चे राष्ट्रभक्त होने के नाते उन्होंने भारतीय खेल कबड्डी को प्रायोजित व सहयोग दिया। नवी मुंबई प्रायोजित क्लाइम्बिंग वर्ल्ड कप' उन्होंने ही प्रायोजित किया। दौड़ के प्रति अनंत का विशेष लगाव था कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मैराथन दौड़ों में उन्होंने हिस्सा लिया। वह निडर थे और साहसिक खेल उन्हें पसंद थे। खुले आसमान में पैराग्लाइडिंग से लेकर गहरे समुद्र में स्कूबाडाइविंग– ये सब उन्होंने किया और इन दो सीमाओं के बीच में जो साहसिक खेल होते हैं वे भी उन्होंने खेले।

अनंत अक्सर प्यानो पर भी अंगुलिया आजमाते थे उनके पास अपने कई वाद्य यंत्र थे और एक शानदार पुस्कालय भी। संगीत के प्रति उनके प्रेम के कारण उन्होंने कबीर फ़ेस्टीवल

व कबीर कैफ़े प्रायोजित किए।

भारतीय संस्कृति व दर्शन के प्रति अनंत आस्थावान थे। उन्हें हर धर्म का ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता थी। कई पुराने मंदिरों के उन्होंने दर्शन किये। जैसे वैष्णोदेवी, तिरुपति बालाजी (कई बार पैदल गए), केदारनाथ (पैदल चलते हुए), बद्रीनाथ, वृंदावन, मथुरा, गोवर्धन परिक्रमा, सोमनाथ आदि। वह चर्च मस्जिद और गुरुद्वारा भी गए। ताकि इन धर्मों में जो अच्छा है उसे जीवन में उतार सकें।

अनंत के लिए पारिवारिक मूल्यों को बहुत महत्त्व था। जानकीदेवी व जमनालाल बजाज, कमलनयन बजाज व रामकृष्ण बजाज की धरोहर से वह बहुत प्रेरित थे।

वह विनोवा भावे के अत्यंत प्रशंसक थे। यहां तक कि पवनार आश्रम में अनंत ने उनके साथ भी समय बिताया। भागवत भास्कर श्री कृष्ण चंद्र शास्त्री 'ठाकुर जी' व प्रो. नंदलाल पाठक के प्रति अनंत, गुरु के रूप में आदरभाव रखते थे। <u>स्टीव जॉब्स को अनंत व्यवसाय गुरु मानते थे और एपल कम्प्यूटर के प्रति सदा निष्ठावान रहे।</u>

काम के दौरान अनौपचारिक वातावरण में अनंत प्रखर युवाओं के बीच रहना पसंद करते थे। उनमें आत्मसम्मान प्रचुर मात्रा में था किन्तु अहं लेश मात्र भी नहीं। अधिक जानकार व्यक्तियों से सीखने के लिए वह उत्सुक रहते थे।

हमेशा सही व ग़लत के बीच फर्क़ समझने की उनमें समझ थी और अपने विचार व्यक्त करने में उन्हें कभी कोई डर नहीं होता था। सच्चाई और न्याय प्रियता सदैव उनके जीवन व कृतित्व के मार्गदर्शक रहे। हालांकि कई दफ़ा वे अपने सहकर्मियों को चुनौती देते थे लेकिन अधिकतर उनके चेहरे पर मुस्कान लाते थे। कभी कटु तो कभी मज़ाकिया अक्सर संवेदनशील किंतु ज्यादातर अद्भुत 'बेजोड़'।

ऐसे थे हमारे अनंत !!! और बाज़ी मार ले गये।

लगता है वह किसी मिशन पर थे.....उन्हें कहीं और किसी दूसरे मिशन को पूरा करने की जल्दी थी।

अनंत का एक मात्र प्रिय गीत जो वो अक्सर गुनगुनाया करते थे।

एक दिन बिक जाएगा माटी के मोल
जग में रह जाएंगे प्यारे तेरे बोल
दूजे के होठों को देकर अपने गीत
कोई निशानी छोड़ फिर दुनिया से डोल।

मेरे अनंत!

चित्रकार के जीवंत चित्र,
प्रकृति के ओ सुन्दर फूल!
कोयल की कूक, भ्रमर की गूँज,
हृदय के उल्लास, प्रेम के विकास!

बता तुझे क्या दूँ आज,
मेरी वाणी या मेरे छंद?
संगीत मधुर या नवीन ग्रन्थ
हृदय-हास या आत्म प्रकाश!

मेरे तन-मन, मेरे अंचल-धन!
कविता के अंग, तूलिका के रंग!
तू मेरी कल्पना का निवास!
मेरी देव-याचना का प्रसाद!

ला बरसा दूँ तुझपर आज,
तृप्त हृदय का अमिट प्यार!
मेरे अनंत, मेरे आधार!
लुटाती हूँ आशिष उपहार!

'माँ'

– किरण बजाज
(1978)

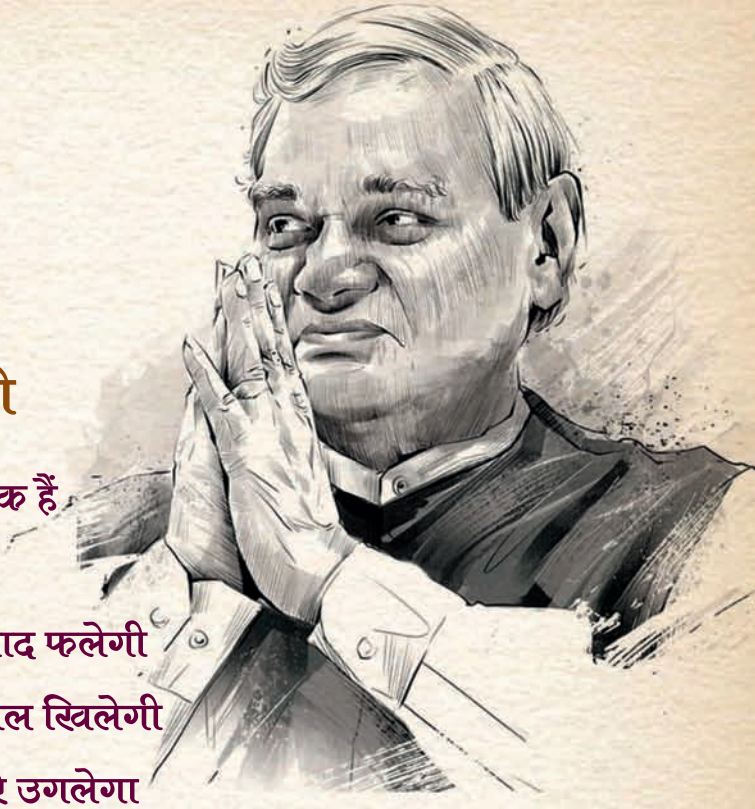

जंग न होने देंगे

विश्व शांति के हम साधक हैं
जंग न होने देंगे।
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी
खलिहानों में नहीं मौत की फसल खिलेगी
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा
एटम से नागासाकी फिर नहीं जलेगी
युद्ध हीन विश्व का सपना भंग नहीं होने देंगे
जंग न होने देंगे।
हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा
मुंह में शांति, बगल में बम, धोखे का फेरा
कफ़न बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा
कामयाब हो उनकी चालें, ढंग न होने देंगे
जंग न होने देंगे।

– अटल बिहारी वाजपेयी
(25 दिसम्बर 1924–16 अगस्त 2018)